www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 27 नवम्बर 2016 — आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र — सप्ताह रविवार, 27 नवम्बर 2016 से 03 दिसम्बर 2016

कार्तिक कृ. –13 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 50, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. सैक्टर-14 गुडगाँव द्वारा 'वैदिक अभ्युदय'-चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–14, गुडगाँव द्वारा दो दिवसीय 'वैदिक अभ्युदय'–चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातःकालीन यज्ञ द्वारा किया गया जिसमें नवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। आर्य समाज के प्रचारक परम श्रद्धेय श्री महेश विद्यालंकार जी की उपस्थिति ने शिविर को गरिमा प्रदान की। प्रखरवक्ता व कुशल लेखक डॉ. महेश विद्यालंकार जीने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों को जीवन के नैतिक मूल्यों की जानकारी देते हुए सदाचारपूर्ण, अनुशासित एवं सुसंस्कृत जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागृत करने हेतु 'एक कदम स्वास्थ्य की ओर' कार्यक्रम के अंतर्गत योगाभ्यास करवाया गया। शिविर में शिविरार्थियों के लिए विविध गतिविधियाँ जैसे–मूल्य–अंत्याक्षरी, संगीतमय मूल्यान्वेषण (मूल्यों की खोज पर आधारित खेल) कहानियाँ बोलती हैं, बात विश्वास की, सकारात्मकता की खोज इत्यादि आयोजित की गईं। इन गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के प्रति सजगता एवं नकारात्मक भावों जैसे कि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा इत्यादि को त्याग कर प्रेम, सौहार्द, समन्वय परोपकार, कृतज्ञता इत्यादि सकारात्मक भावों को अपनाने की शिक्षा दी गई तथा छात्रों को सामाजिक बुराईयों के प्रति सजग किया गया। शिविर में छात्रों की सहभागिता अत्यंत सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण रही।

प्राचार्य जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि इस प्रकार के शिविर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण के साथ–साथ उनके शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उत्थान में अहम भूमिका निभाते हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा ने आयोजित किया रक्तदान शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, यूनिट–8, भुवनेश्वर के विट्ठल राजा हॉल में महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती समारोह धूमधाम से मनायी गयी। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा की प्रधान, तथा विद्यालय की प्राचार्या, श्रीमती डॉ भाग्यवती नायक जी की अध्यक्षता में एक रक्तदान शिविर आयोजित किया गये। श्रीमती नायक ने अपने संबोधन में कहा की रक्तदान से लाखों करोड़ों लोगों को जीवनदान मिल सकता है और थैलासीमिया से पीड़ित लोगों को इससे अत्यंत लाभ हो सकता है।

समाज तथा देश के प्रति गांधीजी के समर्पण भाव को सम्मान देते हुए रेडक्रॉस तथा लायन्स क्लॅब के सहयोग से यह शिविर आयोजित किया गया। बच्चों दवारा "रघुपति राघव राजा राम" की धुन से पूरा वातावरण मुखरित हो उठा। विद्यालय के अभिभावक, शुभचिंतक तथा शिक्षक शिक्षिकाओं ने रक्तदान किया। इस शिविर में 75 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। विद्यालय के हेल्थ एवं वेलनेस क्लॅब, एन.सी.सी, स्काउट्स, गाईड्स, रेडक्रॉस के शिक्षकों तथा बच्चों का योगदान सराहनीय था। "रक्त दान ही महान दान" इस स्लोगन के साथ विद्यालय में गांधी जयंती के शुभ अवसर पर आयोजित यह रक्तदान शिविर अपने उद्देश्य में सफल रहा।

डी.ए.वी. पटियाला में ऋषि निर्वाण दिवस पर मनाया 'दीप-उत्सव सप्ताह'

आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड, पटियाला द्वारा युग पुरुष, महान समाज सुधारक, शिक्षाविद् व क्रांतिकारी आर्य समाज के संस्थापक 'महर्षि दयानंद सरस्वती जी' के 'निर्वाण दिवस' एवं 'दीपावली' के उपलक्ष्य में 'दीप–उत्सव सप्ताह' मनाया गया जिसका शुभारम्भ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन से किया गया। प्राचार्य, शिक्षकवृन्द व विद्यार्थियों ने इस अवसर पर महर्षि जी को श्रद्धांजलि देते हुए पवित्र यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान कीं। 'आर्य युवा समाज' के सदस्यों तथा स्वयं सेवकों ने स्थानीय 'साईं वृद्धाश्रम' चोरा, के वृद्ध शरणार्थियों को फल, बिस्कुट, मिठाई, जूस, दिये और अन्य खाद्य सामग्री बाँटकर उनके साथ दीपावली की खुशियाँ मनाई। सप्ताह भर स्कूल में 'पेपर सजाओ', 'दिवाली ग्रीटिंग कार्ड' बनाओ, 'रामायण' पर प्रश्नोत्तरी, 'दिया पेंटिंग', कुछ मीठा हो जाए, वंदनवार बनाओ, 'कक्षा साज–सज्जा' और 'रंगोली कार्ड' बनाओ आदि विभिन्न प्रतियोगिताएँ करवाई गईं जिनमें लगभग दो हज़ार बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इसके साथ–साथ बच्चों ने 'सर्वमैत्री फांउडेशन चाल्ड्स राइट्स' (एन.जी.ओ.) द्वारा भेजे गए 500 मिट्टी के दीये सुन्दर रंगों से सजाये। इन दीयों की प्रदर्शनी स्थानीय महारानी क्लब में लगाई गई तथा उससे एकत्रित धन राशि से गरीब व असहाय लोगों में फल, मिठाई, और अन्य खादय सामग्री बाँटी गई।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 27 नवम्बर 2016 से 03 दिसम्बर 2016

जीवन-यज्ञ अविच्छिन्न रहे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

घृतस्य जूतिः समना सदेवा, संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती।
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोऽछिन्नो नो अस्तु, अच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः।।

अथर्व 16.58.1

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **यज्ञः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**घृतस्य**) आत्मतेज-रूप घृत की (**जूतिः**) वेगवती धारा (**समना**) मन-सहित [और] (**सदेवा**) इन्द्रियों-सहित (**संवत्सरं**) शत-संवत्सर जीवन -यज्ञ को (**हविषा**) हवि से (**वर्धयन्ती**) बढ़ाती [रहे]। (**नः**) हमारा (**क्षोत्र**) क्षोत्र, (**चक्षुः**) नेत्र [और] (**प्राणः**) प्राण (**अच्छिन्नः अस्तु**) अच्छिन्न रहे। (**वयं**) हम (**आयुष**) आयु से [तथा] (**वर्चसः**) वर्चस्विता से (**अच्छिन्नाः**) अच्छिन्न [रहें]।

● मनुष्य का जीवन सौ या सौ से भी अधिक वर्ष तक चलनेवाला एक यज्ञ है, जिसे 'शत-संवत्सर यज्ञ' भी कहा जाता है। हम चाहते हैं कि हमारा यह यज्ञ निर्विघ्न चलता रहे। जैसे बाह्य यज्ञ तभी प्रवृत्त रह सकता है, जब उसमें यजमान और ऋत्विजों द्वारा निरन्तर हवि की आहुति पड़ती हे, वैसे ही हमारे इस शरीर यज्ञ के निर्बाध चलते रहने के लिए भी यह आवश्यक है कि इसका यजमान और इसके ऋत्विज् इसे हवि द्वारा बढ़ाते रहें। आत्मा ही इस का 'यजमान' है, मन 'ब्रह्म' है, प्राण 'उद्गाता' है, वाणी 'होता' है चक्षु 'अध्वर्यू' है। अतः आत्मा की आत्म-तेज-रूप घृत की आहुति, मन की प्रबल संकल्प की आहुति और सब ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रयों की अपनी-अपनी ज्ञान-कर्म-रूप हवियों की आहुति हमारे इस 'शत-संवत्सर' जीवन-यज्ञ में पड़ती रहनी चाहिए। यदि आत्मा, मन और इन्द्रिय-देव इस यज्ञ में सहायक नहीं होंगे, तो हमारा यह जीवन - यज्ञ समय पूर्व ही विच्छिन्न हो जाएगा। अतः हमारे क्षोत्र, नेत्र, प्राण आदि की शक्तियाँ प्रअक्षुण्ण रहनी चाहिएँ, जिससे हम चिर-काल तक कानों से शब्द, नेत्रों से रूप, नासिका से गन्ध, रसना से रस, त्वचा से स्पर्श का ग्रहण कर सकें और प्राण-अपना आदि की क्रियाओं को सम्यक् प्रकार से करते रहें। यदि हमारी ये इन्द्रियाँ दुर्बल, या अशक्त हो जाती हैं तो हमारे जीवन की वही अवस्था होगी, जो ऋत्विजों के दुर्बल, अशक्त या उदासीन हो जाने पर यज्ञ की होती है। यदि आयु से तथा वर्चस्विता से अच्छिन्न रहना चाहते हैं, तो हमें अपने जीवन-यज्ञ के यजमान और ऋत्विजों को सबल, सशक्त और निरन्तर जागरूक रखना होगा।

हे मेरे आत्मन्! हे मन! हे प्राण! हे इन्द्रिय-देवो! तुम जागते रहो, जीवन-यज्ञ में हवि डालते रहो, यज्ञ को प्रज्वलित, प्रवृद्ध, अच्छिन्न तथा वर्चस्वी बनाये रहो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

मानव जीवन गाथा

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि मन को प्रत्येक दिशा में रोककर एकाग्र करके ओ३म् का ध्यान करो तो वह दृष्टिगोचर न होने वाला भी दृष्टिगोचर होता है। आत्मदर्शन कैसे होता है, मुण्डक उपनिषद के एक मंत्र की व्याख्या कर सत्य व तप के महत्व को बताया। सत्य से आत्मा के दर्शन होते हैं, तप वह साधन है जिसके बिना संसार का कोई कार्य होता नहीं। ईश्वर ने भी इस सृष्टि को रचा तो तप का आश्रय लेकर। जिन घरों में तप की भावना नहीं, वहाँ प्रतिदिन लड़ाई होती रहती है। मनुष्य को क्रोध नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपकी पूजा, जप, तप, योग-साधन स्वाध्याय सब व्यर्थ हो जायेंगे, यदि आप सहनशक्ति से क्रोध को वश में नहीं कर सकते। इस सहनशक्ति को उत्पन्न करना ही तप है।

---अब आगे

महात्मा सुकरात बहुत बड़े विद्वान् और दार्शनिक थे। सारा यूनान उनका आदर करता था। परन्तु उनकी धर्मपत्नी थी क्रोध की साक्षात् मूर्ति। हर समय लड़ती वह। मीठा बोलना उसने सीखा नहीं था। प्रतीत होता था चीनी उसने कभी खाई नहीं। सदा कुनैन ही खाती रही। सुकरात घर पर मौन होकर बैठते तो वह चिल्लाना आरम्भ कर देती, "हर समय चुप ही बैठे रहते हैं!" वे कोई पुस्तक पढ़ते तो चिल्ला उठती, "आग लगे इन पुस्तकों को! इन्हीं के साथ विवाह कर लेना था! मेरे साथ क्यों किया?" एक दिन वे आये तो पत्नी ने इसी प्रकार बकना-झकना प्रारम्भ किया। सुकरात के कुछ विद्यार्थी और भक्त भी उनके साथ थे। उन्होंने इस बात का बहुत बुरा माना, परन्तु सुकरात मौन बैठे रहे। पत्नी ने उन्हें मौन देखा तो उसका क्रोध का पारा और भी चढ़ गया और वह और भी ऊँची आवाज़ में बोलने लगी। सुकरात फिर भी चुपचाप बैठे रहे। पत्नी ने तब क्रोध से पागल होकर मकान के बाहर पड़ा हुआ गन्दा कीचड़ एक बर्तन में भरा, शीघ्रता से आकर सारा कीचड़ सुकरात के सिर पर डाल दिया। तब सुकरात हँसकर बोले, "देवी! आज तो पुरानी कहावत अशुद्ध हो गई। कहावत है कि गरजनेवाले बरसते नहीं, आज देखा कि जो गरजते हैं वे बरसते भी है।" सुकरात हँसते रहे परन्तु उनका एक विद्यार्थी क्रोध में आ गया। उस विद्यार्थी ने चिल्लाकर कहा, "यह स्त्री तो चुड़ैल है, आपके योग्य नहीं।" सुकरात बोले, "नहीं, योग्य है। यह ठोकर लगा-लगाकर देखती रहती है कि सुकरात कच्चा है या पक्का। इसके बार-बार ठोकर लगाने से मुझे भी पता लगता रहता है कि मेरे अन्दर सहनशक्ति है या नहीं।" पत्नी ने ये शब्द सुने तो झट उनके चरणों में गिर पड़ी। रोती हुई बोली, "आप तो देवता हैं, मैंने आपको पहचाना नहीं।" यह तप की महिमा है। तप से और सहनशीलता से अन्ततोगत्वा मनुष्य को विजय प्राप्त होती है। बुरे व्यक्ति भी अपना स्वभाव बदल लेते हैं।

एक युवती नववधू बनकर ससुराल में आई, तो जो सास उसको मिली-हे मेरे भगवान्! दुर्वासा का अवतार। दिन में दो-तीन बार जब तक लड़ न ले, तब तक भोजन नहीं पचता था। वधू आई तो सास ने सोचा-अब घर में ही लड़ लो, बाहर लड़ने के लिए काहे को जाना? बहू को बात-बात पर वह ताने देने लगी, "तुम्हारे बाप ने तुम्हें सिखाया क्या है? तुम्हारी माँ ने तुम्हें क्या यही शिक्षा दी है? तेरे-जैसी मूर्ख तो मैंने कभी देखी नहीं।" बहू यह सब-कुछ सुनती और सुनकर मौन हो रहती। सास चिल्लाकर कहती, "अरी! तेरे मुख में जीभ भी नहीं है?" बहू फिर भी शान्त बनी रहती। उसके मौन को देखकर सास का जिह्वारूपी घोड़ा क्रोध की सड़क पर द्रुत गति से दौड़ने लगता। प्रतिदिन ऐसा ही होता। पास-पड़ोस के सभी लोग इस व्याधा को देखते, मन ही मन में सोचते-यह सास है या डायन?

एक दिन वह इसी प्रकार बहू पर बरस रही थी, बहू मौन थी। सास कह रही थी, "अरी, पृथिवी पर लात मारें तो वह भी शोर करती है और मैं इतना बोल रही हूँ फिर भी तू चुप है, तू तो मिट्टी से भी गई-बीती है।" तभी एक पड़ोसिन ने कहा, "बुढ़िया! लड़ने की बहुत इच्छा है, तो आकर हमसे लड़। तेरा चस्का पूरा हो जायेगा। इस बेचारी गाय के पीछे क्यों पड़ रही है, जो उत्तर भी नहीं देती?" वधू ने तुरन्त उठकर कहा, "नहीं, इन्हें कुछ भी मत कहिये। ये मेरी माँ हैं। माँ ही बेटी को नहीं समझायेगी तो फिर कौन समझायेगा?" सास ने यह बात सुनी तो लज्जित हो गई। फिर कभी उसने क्रोध नहीं किया। बहू की सहनशक्ति ने सास का स्वभाव ही बदल दिया।

देखो, हीरा और कोयला दोनों एक ही

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

वेद सदा से चार हैं

● खुशहाल चन्द्र आर्य

कुछ लोगों की मान्यता है कि मूलरूप से वेद एक ही था। महर्षि व्यास जी ने उसे चार भागों में विभाजित करके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में प्रस्तुत किया। ऐसा कहने का आधार पुराण है। "आदि काल में यजुर्वेद ही था, उसके चार विभाग वेदव्यास ने किये" (विष्णु पुराण 3/6)

अग्नि पुराण के अनुसार चार भागों में विभक्त होने से पूर्व एक यजुर्वेद था जिसमें एक लाख मन्त्र थे। मत्स्यपुराण (144/10) विष्णुपुराण (3/3/18) में भी इसी मत का अनुमोदन किया है। लेकिन स्वयं वेद, आर्ष ग्रन्थों और आर्य वचनों से प्रमाणित होता है कि सृष्टि के आदि में ही एक साथ चारों वेदों का प्रादुर्भाव हुआ था। वेद व्यास जी द्वारा वेद के चार विभाग किये जाने की कल्पना अयुक्त एवं सर्वथा असंगत है।

वेद व्यास जी से पूर्व उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थ अस्तित्व में आ चुके थे। यह हो सकता है कि वेदव्यास जी ने अपने समय में भिन्न–भिन्न बहुत–सी शाखा बन जाने के कारण ब्राह्मण और श्रौत सूत्र आदि का निश्चय कर दिया हो कि किस–किस शाखा का कौन–सा ब्राह्मण है। यह भी सम्भव है कि वेदव्यास जी ने शाखाओं पर प्रवचन और व्याख्यान किया हो और इस प्रकार वे वेदों का प्रचार–प्रसार करने में बहुत सहायक रहे हों।

इस विषय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि–"यह बात कि वेदव्यास जी ने वेद रचे हैं मिथ्या है, कारण वेदव्यास जी ने भी वेद पढ़े थे और उनके पितामह पराशर, उनके पितामह शक्ति और प्रपितामह वसिष्ठ और बृहस्पति आदि ने भी वेद पढ़े थे। जो व्यास ने बनाये होते तो वे कैसे पढ़ते, कारण व्यास जी तो बहुत पीछे हुए हैं। और जो उनका वेद व्यास नाम पड़ा है वह इस रीति से पड़ा है कि उन्होंने वेदों को पढ़ कर औरों को पढ़ाये हैं जिससे वेदों का पठन–पाठन फैलाया और वेदों में उनकी बुद्धि विशाल थी कि यथावत् शब्द, अर्थ और सम्बन्ध से वेदों को जागते थे। इसलिए इनका नाम वेद व्यास रखा गया"। (सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम–संस्करण)

चारों वेदों का वर्णन त्रयी विद्या के नाम से भी किया जाता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वेद तीन हैं। यह वर्णन चारों वेदों से सम्बन्धित है। ब्राह्मण ग्रन्थों में त्रयी विद्या का वर्णन आया है। जिस शतपथ ब्राह्मण में चारों वेदों का नामो सहित उल्लेख मिलता है, उसी में यह भी लिखा है कि –"**त्रयी वै विद्या–ऋचो यजूँषि सामानि इति**" (शतपथ ब्राह्मण 4/6/7) अर्थात् विद्या भेद से वेद तीन कहाते हैं।

त्रयी विद्यामवेक्षेत वेदे सूक्तामथाङ्गतः।
ऋक्सामवर्णाक्षरतो यजुषोऽथर्वणस्तथा।।

(महाभारत शान्ति पर्व 235/1)

महर्षि व्यास के इस श्लोक में त्रयी विद्या के साथ चार वेदों का उल्लेख होने से स्पष्ट हो जाता है कि त्रयी विद्या वेद चतुष्टय का ही दूसरा नाम है।

मनु महाराज के अनुसार विद्याएँ तीन हैं–दण्डनीति (राजनीति), आन्वीक्षिकी (पदार्थ विज्ञान) तथा अध्यात्म (शरीर, आत्मा व परमात्मा सम्बन्धी)। वस्तुतः जब संहिताओं अथवा मुख्य प्रतिपाद्य विषय–ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान को लक्ष्य कर व्यवहार किया जाता है तब निश्चय ही वेद चतुष्टय कहा जाता है। परन्तु जब केवल रचना की दृष्टि से वेद का उल्लेख होता है तब वेदत्रयी अथवा केवल त्रयी कहा जाता है। रचना तीन प्रकार की होती है–गद्य, पद्य और गीति। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का क्रमशः पद्य, गद्य और गीति अर्थ करके चारों वेदों के लिए त्रयी शब्द का प्रयोग भी उत्तराकालीन है।

"**ऋचो नामास्मि यजूषि नामास्मि सामानि नामास्मि**" (यजु. 18/67) जब स्वयं यजुर्वेद बार–बार चारों वेदों के नाम ले रहा है तब "प्रारम्भ में एक यजुर्वेद था, कालान्तर में उसके चार भाग हुए" जैसी बातें कैसे स्वीकार की जा सकती हैं?

शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत्।
अन्तर्मे तिश्चरति विष्धं गोर्महद्दे वानामसुरत्वमेकम्।। (ऋ. 3/55/8)

हे मनुष्यो! जैसे युद्ध में रत समीपस्थ वीर के समीप कायर मनुष्य तुच्छ सा दिखता है, वैसे ही सर्वशक्तिमान् अनन्त परमात्मा के समीप सूर्य आदि जगत् हीन और तुच्छ हैं। जो जगदीश्वर विद्या के कोश रूप और वाणी के आभूषण चारों वेदों को शासित करता है (रचता है) उसे ही तुम अपना इष्ट मानो।

स्वयं वेदों, वेदोत्तर वाङ्मय तथा अन्य आप्त वचनों से प्रमाणित है कि सृष्टि के आदि में ही एक साथ चारों वेदों का प्रादुर्भाव हुआ।

मेरा यह लेख लिखने का तात्पर्य यह है कि स्वार्थी ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए वेदों को भुलाने हेतु पुराणों में कितनी गलत व असम्भव बातें लिख दी हैं, जिनको पढ़कर हमारे पौराणिक भाई पथ–भ्रमित हो गये हैं और वेद जो ईश्वरीय ज्ञान है उसको भुलाकर पुराणों में लिखी गलत बातें जैसे ईश्वर का अवतार लेना, मूर्तिपूजा को ईश्वर की उपासना का माध्यम बताना, श्राद्ध–तर्पण, फलित ज्योतिष, भूत–प्रेत, जादू–टोना, ताबीज, श्राप व वरदान आदि अन्धविश्वासों को मानने से देश का जो पतन हुआ है उसको पाठक गण जान सकें और देव दयानन्द ने अनेक कष्टों व मुसीबतों को सहन करते हुए अज्ञान, अन्ध विश्वास व पाखण्ड को कैसे दूर किया और वैदिक धर्म की किस प्रकार स्थापना की यह सब जान सकें। इन सब बातों का इस लेख द्वारा सद् प्रयास किया है। आशा है सुधि पाठक गण इसका लाभ उठायेगे।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स
180 महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला) कोलकता–700007
फोन (033) 22183825, मो. 9830135794

पण्डित प्रकाश वीर शास्त्री

● डॉ. अशोक आर्य

आर्य समाज के जो प्रमुख वक्ता हुए, कुशल राजनेता हुए उनमें पं. प्रकाश वीर शास्त्री जी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। आप का नाम प्रकाशचन्द्र रखा गया। आप का जन्म गांव रहरा, जिला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। आप के पिता का नाम श्री दिलीप सिंह त्यागी था, जो आर्य विचारों के थे।

उस काल का प्रत्येक आर्य परिवार अपनी सन्तान को गुरुकुल की शिक्षा देना चाहता था। इस कारण आप का प्रवेश भी पिता जी ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में किया। इस गुरुकुल में एक अन्य विद्यार्थी भी आप ही के नाम का होने से आप का नाम बदल कर प्रकाशवीर कर दिया गया। इस गुरुकुल में अपने पुरुषार्थ से आपने विद्याभास्कर तथा शास्त्री की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। तत्पश्चात् आप ने संस्कृत विषय में आगरा विश्व विद्यालय से एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की।

पण्डित जी स्वामी दयानन्द जी तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों में पूरी आस्था रखते थे। इस कारण ही आर्य समाज की अस्मिता को बनाए रखने के लिए आपने 1939 में मात्र 16 वर्ष की आयु में ही हैदराबाद के धर्म युद्ध में भाग लेते हुए सत्याग्रह किया तथा जेल गये।

आप की आर्य समाज के प्रति अगाध आस्था थी, इस कारण आप अपनी शिक्षा पूर्ण करने पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माध्यम से उपदेशक स्वरूप कार्य करने लगे। आप इतना ओजस्वी व्याख्यान देते थे कि कुछ ही समय में आप का नाम देश के दूरस्थ भागों में चला गया तथा सब स्थानों से आपके व्याख्यान के लिए आप की मांग देश के विभिन्न भागों से होने लगी।

पंजाब में सरदार प्रताप सिंह कैरों के नेतृत्व में कार्य कर रही कांग्रेस सरकार ने हिन्दी का विनाश करने की योजना बनाई। आर्य समाज ने पूरा यत्न हिन्दी को बचाने का किया किन्तु जब कुछ बात न बनी तो यहाँ हिन्दी रक्षा समिति ने सत्याग्रह आन्दोलन करने का निर्णय लिया तथा शीघ्र ही सत्याग्रह का शंखनाद 1958 ईस्वी में हो गया। आप ने भी इस समय अपनी आर्य समाज के प्रति निष्ठा व कर्तव्य दिखाते हुए सत्याग्रह में भाग लिया। इस आन्दोलन ने आप को आर्य समाज का सर्वमान्य नेता बना दिया।

इस समय आर्य समाज के उपदेशकों की स्थिति कुछ अच्छी न थी। इन की स्थिति को सुधारने के लिए आप ने अखिल भारतीय आर्य उपदेशक सम्मेलन स्थापित किया तथा लखनऊ तथा हैदराबाद में इस के दो सम्मेलन भी आयोजित किये। इससे स्पष्ट होता है कि आप आर्योपदेशकों के कितने हितैषी थे।

आप की कीर्ति ने इतना परिवर्तन लिया कि 1958 ईस्वी को आप को लोक सभा का गुड़गाँव से सदस्य चुन लिया गया। इस प्रकार अब आप न केवल आर्य नेता ही बल्कि देश के नेता बन कर राजनीति में उभरे। 1962 तथा 1967 में फिर दो बार आप स्वतन्त्र प्रत्याशी स्वरूप लोक सभा के लिए चुने गए। एक सांसद के रूप में आप ने आर्य समाज के बहुत से कार्य निकलवाये।

1975 में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, जो नागपुर में सम्पन्न हुआ, में भी आप ने खूब कार्य किया तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मंगलवारी नागपुर के सभागार में, सम्मेलन में पधारे आर्यों की एक सभा का आयोजन भी किया। इस सभा में (हिन्दी सम्मेलन में पंजाब के प्रतिनिधि स्वरूप भाग लेने के कारण) मैं भी उपस्थित था, आप के भाव प्रवाह व्याख्यान से जन–जन भाव विभोर हो गया।

आप ने अनेक देशों का भ्रमण किया तथा जहाँ भी गए, वहाँ आर्य समाज का सन्देश साथ लेकर गये तथा सर्वत्र आर्य समाज के गौरव को बढ़ाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहे। जिस आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपदेशक बनकर आपने कार्य क्षेत्र में कदम बढ़ाया था, उस आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आप अनेक वर्ष तक प्रधान रहे। आप के ही पुरुषार्थ से मेरठ, कानपुर, वाराणसी में आर्य समाज स्थापना शताब्दी सम्बन्धी सम्मेलनों को सफलता मिली। इतना ही नहीं आप की योग्यता के कारण सन् 1974 ईस्वी में आप को परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया गया।

आप का जीवन यात्राओं में ही बीता तथा अन्त समय तक यात्राएं ही करते रहे। अन्त में जयपुर से दिल्ली की ओर आते हुए एक रेल दुर्घटना हुई। इस रेल गाड़ी में आप भी यात्रा कर रहे थे। इस दुर्घटना के कारण 23 नवम्बर 1977 ईस्वी को आप की जीवन यात्रा भी पूर्ण हो गई तथा आर्य समाज का यह महान योद्धा हमें सदा के लिए छोड़ कर चला गया।

104 शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी–201010
गाजियाबाद
मो. 9718528068

www.thearyasamaj.org

महात्मा हंसराज

● शिव नारायण उपाध्याय

भारत में बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक अविद्या का अंधकार छाया हुआ था। देश भर में शिक्षा के प्रचार–प्रसार की कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी। सन् 1931 की जन गणना के समय तक देश में केवल 7 प्रतिशत लोग साक्षर थे। निर्धनता ऐसी थी कि जिसका शब्दों में वर्णन करते हुए हृदय कांपता है। सन् 1899 के अकाल में लाखों लोग भूख से तड़प–तड़प कर प्राण त्यागने को मजबूर हो गए थे। एक दिन के भोजन के लिए अपने प्राण प्यारे बच्चों को बेचने को विवश हो गए थे। ईसाई मिशनरीज ने इसका लाभ उठाकर राजस्थान में ही लगभग 20,000 बालकों को अपने अनाथालयों में प्रवेश देकर ईसाई बना लिया था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही आने वाली इन भयंकर घटनाओं को जान लिया था। इसलिए उन्होंने अपने अनुयायियों से याचना की कि वे शिक्षा प्रचार को सबसे अधिक प्रचार दें तथा देश की निर्धनता पर विजय पाने के लिए स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण और प्रचार प्रसार में सहायक बनें।

देश के दुर्भाग्य से स्वामी दयानन्द अपनी आयु के केवल 58 वर्ष पूरे करने के बाद ही अपने ही सनातन समाज कहे जाने वाले लोगों के षड्यन्त्र का शिकार हो गए। उन्हें विष देकर 30 अक्टूबर 1883 को देह त्यागने को विवश कर दिया गया। उनकी मृत्यु के समय पंजाब से पण्डित गुरुदत्त व जीवनदास आए हुए थे। उन्होंने जो कुछ देखा उसने उन्हें एकदम बदल दिया।

वे लोग जब वापस पंजाब पहुँचे तब 8 नवम्बर 1883 को लाहौर में एक शोक सभा आयोजित हुई। सभा ने निश्चय किया कि स्वामीजी की याद में एक महाविद्यालय तथा एक उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया जाए। इनमें पश्चिमी शिक्षा के साथ–साथ वैदिक वाङ्मय की शिक्षा भी छात्रों को दी जाए जिससे कि वे अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति को अपने आचरण में स्थान देकर देश के श्रेष्ठ नागरिक के रूप में अपने को स्थापित करने में सफल हो सकें। एतदर्थ चन्दे की अपील भी की गई और इस सभा में ही सात रुपया हजार प्राप्त हो गया।

दिसम्बर 1883 तक लगभग 10,000 रुपये एकत्रित हो गए। संस्था किस प्रकार की शिक्षा देगी, इस पर बताया गया कि संस्था में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अवगुणों को त्यागकर केवल गुणों को ग्रहण किया जाएगा। संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा देकर शिक्षित और अशिक्षित में मेल कराया जाएगा। ऋषियों के ग्रन्थों को पढ़ाकर परमात्मा और आत्मा की उलझनें सुलझाई जाएंगी। शिक्षा में शिल्प को स्थान मिलेगा जिससे शिक्षा अर्थ देने वाली बन जाएगी।

महाविद्यालय की योजना बनी। निर्णय लिया कि विद्यालय के प्राचार्य को 250/– रुपया मासिक तथा महाविद्यालय के प्राचार्य को 500/– रुपया मासिक वेतन दिया जाएगा। परन्तु चंदा तो इकट्ठा हो ही नहीं रहा था। तब एक बाईस वर्षीय नवयुवक लाला हंसराज के मन में प्रेरणा हुई कि यदि मैं अवैतनिक प्राचार्य का कार्य करने लग जाऊँ तो महाविद्यालय चल सकता है। हंसराज बी.ए. कर चुके थे। उन्हें अच्छी राजकीय नौकरी प्राप्त होना सामान्य बात थी। परन्तु उन्हें तो त्यागी तपस्वी बनना था। उन्होंने अपने बड़े भाई मुल्कराज से बात की। उन्होंने भी छोटे भाई का समर्थन किया और कहा कि मुझे 80 रुपया मासिक वेतन मिलता है, इसमें से आधा वेतन मैं तुम्हें अपना खर्च चलाने के लिए देता रहूंगा और आगे भी जैसे–जैसे मेरे वेतन में वृद्धि होगी तुम्हें भी उसका लाभ मिलता रहेगा। हंसराज द्वारा लाहौर आर्य समाज के अध्यक्ष को इस विषय में पत्र द्वारा सूचना दे दी गई। 3 नवम्बर 1885 को आर्य समाज की बैठक में इस पत्र पर विचार हुआ और हंसराज के जीवन अर्पण को स्वीकृति भी मिल गई। कार्य आगे बढ़ा और 1 जून 1886 को विद्यालय का कार्य प्रारम्भ हो गया। आश्चर्य की बात है कि 5 जून 1886 तक विद्यालय में 300 छात्रों ने प्रवेश ले लिया था। विद्यालय को बिना किसी कठिनाई के राजकीय मान्यता भी मिल गई। विद्यालय के परीक्षा परिणाम भी लगातार श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर की ओर जाने लगे। विद्यालय को ऐसी सफलता प्राप्त हुई कि महाविद्यालय प्रारम्भ का भी निर्णय लेना पड़ा।

महाविद्यालय के लिए प्राचार्य की नियुक्ति का प्रश्न उपस्थित हुआ तो सर्व सम्मति से लाला हंसराज को ही प्राचार्य के पद पर नियुक्त कर दिया गया। यह भी एक आश्चर्य का ही विषय है कि 1 जून 1886 को तो विद्यालय प्रारम्भ हुआ था और केवल 3 वर्ष बाद ही सन् 1889 ई. में वह महाविद्यालय बन गया। इस काल में पूरे भारत में महाविद्यालय में केवल लाला हंसराज ही भारतीय प्राचार्य थे। शेष सभी महाविद्यालयों में अंग्रेज ही प्राचार्य का कार्य कर रहे थे। लाला हंसराज जीतोड़कर अथक रूप से अपने कार्यों में लगे रहते थे। उनकी कार्य क्षमता को देखकर सन् 1890 में उन्हें आर्य समाज अनारकली का तथा सन् 1891 ई. में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का भी अध्यक्ष बना दिया गया। परन्तु महाविद्यालय के तीव्रगति से बढ़ते विकास ने समाज में फूट भी डाल दी। सन् 1893 में आर्य समाज में दो दल हो गए। महाविद्यालय का खुल कर विरोध किया जाने लगा। मार पीट की स्थिति भी उपस्थित हो गई परन्तु लाला हंसराज ने धैर्य पूर्वक सबको सहन किया। महाविद्यालय को मांस पार्टी तथा विरोधी पार्टी को घास पार्टी कहा जाने लगा। महाविद्यालय लगातार विकास की ओर अग्रसर होता रहा। भवन पर भवन बनने लग गए। भवनों के निर्माण में पैसों की कमी आड़े नहीं आयी। सन् 1909 ई. तक महाविद्यालय कोष में धन जमा किया जा चुका था। भवन बन गए तब त्यागी लोगों की अधिक आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। लाला हंसराज के त्याग ने कई नवयुवकों को प्रभावित किया। लाला लाजपत राय तो प्रारम्भ से ही महाविद्यालय के लिए त्याग भाव से कार्य कर रहे थे। फिर लाला साईं दास, लाला दीवानचन्द, भाई परमानन्द, मेहरचन्द आदि आगे आए और कालान्तर में सभी ने किसी न किसी महाविद्यालय के प्राचार्य बन कर आर्य समाज के शिक्षा प्रचार–प्रसार के कार्य को गतिशील बनाए रखा।

समाज सुधार, शिक्षा प्रचार के कार्य को उच्च स्तर तक पहुँचाने वाले लाला हंसराज का जीवन अत्यन्त सादा था। वह सदा खादी ही धारण करते। खादी का कुरता और खादी का ही पाजामा। अपने जीवन में अपरिग्रह को स्थान दिया हुआ था इसलिए अधिक कपड़े न वह पहनते और न रखते। विदेशी वस्तुओं का तो वह प्रयोग ही नहीं करते थे। महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में वे कोई भी उपहार स्वीकार नहीं करते थे।

अत्यधिक काम और अपर्याप्त भोजन से उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। उन्होंने आयुर्वेदिक उपचार लिया और स्वास्थ्य सुधरने लग गया। इस प्रकार जीवन–आहुति दिए पच्चीस वर्ष व्यतीत हो गए। अन्त में 27 नवम्बर 1911 को उन्होंने महाविद्यालय प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष लाला लालचन्द को अपना त्याग पत्र प्रस्तुत कर दिया। 2 फरवरी 1912 को त्यागपत्र स्वीकार हो गया। सन् 1912 में उन्हें महाविद्यालय प्रबन्धक समिति का अध्यक्ष बना दिया गया। उनका जीवन सदैव संघर्षमय रहा। 19 फरवरी 1914 ई. को उनके सुपुत्र बलराज को क्रान्तिकारी दल का सदस्य होने के सन्देह में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। 21 मई को मुकद्दमा हैरिसन सेशन जज के सामने पेश हुआ। उधर बलराज की माताजी अस्वस्थ हो गईं। सात जुलाई को उनकी मृत्यु हो गई। 15 अक्टूबर को बलराज को आजीवन कैद की सजा सुना दी गई। अपील करने पर सजा सात वर्ष की कर दी गई।

महात्मा हंसराज एक महाविद्यालय के प्राचार्य मात्र ही नहीं थे। वे हिन्दू समाज को अन्धविश्वासों से दूर हटाकर विद्या के प्रकाश में अपनी निर्धनता को भी भगा देना चाहते थे। उन दिनों आये दिन देश में अकाल पड़ा करता था जो लाखों लोगों के प्राणों की आहुति लेने के साथ–साथ असंख्य बालक–बालिकाओं को ईसाई धर्म अपनाने को भी बाध्य कर देता था। महात्मा हंसराज ने इस विकट स्थिति में पीड़ित लोगों के सहायतार्थ कार्य करना भी अपना कर्त्तव्य मान रखा था।

सन् 1895 ई. में बीकानेर तथा मध्य भारत में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय ने पीड़ितों की सहायता से दिन–रात एक कर दिया। इस दुर्भिक्ष में लगभग 30 लाख लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी। दयानन्द महाविद्यालय के स्वयंसेवकों ने जान खतरे में डालकर असंख्य हिन्दू बालकों को ईसाई बनने से रोका और लाखों लोगों के प्राण बचाए। सन् 1899 में फिर दुर्भिक्ष का आक्रमण हुआ। सहायता कार्य की योजना बनाई और कार्य प्रारम्भ हुआ परन्तु सरकार इनके कार्य में लगातार बाधा उत्पन्न करती रही। फिर भी इन्होंने 14000 बच्चों को बचाया और पंजाब में उनके लिए अनाथालय खोले। हर वर्ग के हिन्दुओं ने इस कार्य में उनकी सहायता की। फिर तो सन् 1905 में कांगड़ा भूकम्प, सन् 1907–8 में अवध में दुर्भिक्ष, सन् 1918 में गढ़वाल में दुर्भिक्ष के अवसर पर पीड़ित जनता को केवल मात्र आर्य समाज का सहारा प्राप्त होता था। सन् 1921 के अन्तिम दिनों में मद्रास प्रान्त के मालाबार में मुसलमानों ने एकाएक हिन्दुओं पर आक्रमण कर दिया। मन्दिरों को तोड़ दिया और हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया। जिन लोगों ने धर्म परिवर्तन से मना किया उन्हें कत्ल कर दिया गया। समाचार मिलते ही ऋषिराम बी.ए. को मालाबार भेज दिया गया। पं. मस्तान चन्द को इसलिए भेजा गया कि 2500 हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया था उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में लाया जाय। इस कार्य में भी सफलता प्राप्त हुई। महात्मा हंसराज को व्यक्ति को पहचानने का बड़ा अभ्यास था। एक बार नवयुवक लाला खुशहालचन्द ने उनके व्याख्यान को लिख उन्हें बताया तो वे इतने प्रभावित हुए कि उसके पिता से नवयुवक को अपने लिए मांग लिया। इस युवक ने भी उनके चरणों में 36 वर्ष तक बैठकर महाविद्यालय और हिन्दू समाज की सेवा की। आगे चलकर उन्हें महात्मा आनन्द स्वामी के रूप में आर्य समाज के श्रेष्ठतम सन्यासी माना गया। उसने बीसियों पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में लिखीं और समाज में वेद का प्रचार–प्रसार किया। योग विद्या में भी अपने काल के बड़े योगियों में माना जाता था। उन्हीं के पौत्र श्री पूनम सूरी ज्ञान की मशाल को लेकर देश–विदेश में अलख जगा रहे हैं। ऐसे महान् शिक्षाविद् महात्मा हंसराज 15 नवम्बर 1938 को सब कुछ छोड़कर ब्रह्मलीन हो गए।। इति शम्।

73 शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
(राजस्थान) कोटा

www.thearyasamaj.org

पर्यावरण एवं उसकी शुद्धि की प्रक्रिया

● महात्मा चैतन्यमुनि

पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या आज संसार की प्रमुख समस्याओं में से एक हो गई है। वायु, जल, पृथ्वी तथा आकाश सभी इस प्रदूषण की चपेट में आ गए हैं। कुछ समय पूर्व उच्चतम न्यायालय के निवर्तमान मुख्य न्यायाधीश श्री पी.एन. भगवती की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई थी तथा इस समिति ने दिल्ली के पर्यावरण का निरीक्षण करके जो रिपोर्ट सौंपी थी वह न केवल चौंकाने वाली है बल्कि वह हमें भविष्य में आने वाली अनेक प्रकार की मुसीबतों से भी आगाह करने वाली है। रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली का पर्यावरण इतना अधिक बिगड़ गया है कि यदि इस ओर समय रहते ध्यान न दिया गया तो लोगों में हृदय रोग, गुर्दे और जिगर के रोग तो बढ़ेंगे ही मगर आने वाली सन्तानों अर्थात् गर्भस्थ शिशुओं के स्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। रिपोर्ट में यहाँ तक लिखा गया था कि यदि पर्यावरण–प्रदूषण को दूर न किया गया तो भविष्य में ऐसे बच्चे पैदा होने की संभावना है जो पैदा होते ही मंद–बुद्धि के होंगे। वैज्ञानिकों के सामने आज एक और भयंकर समस्या यह पैदा हो गई है कि ओजोन की पर्त में एक छेद हो गया है तथा यह छेद निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। यदि इस बढ़ते हुए छेद को न रोका गया तो लोग न केवल अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाएंगे बल्कि सूर्य की तेज बैंगनी किरणों से ध्रुवों पर जो सदियों से बर्फ जमा हुआ है वह पिघलना आरंभ हो जाएगा जिससे बहुत से देशों के जलमग्न हो जाने की आशंका भी है। पर्यावरण के प्रदूषित होने का सबसे बड़ा कारण है ज़हरीली तथा दुर्गन्धयुक्त गैसें। इनके कारण ही हवा–पानी आदि समस्त महाभूत प्रदूषित हो चुके हैं। इनके प्रदूषित होने से ही आज तरह–तरह की भयंकर बीमारियों का प्रकोप भी दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। आज समाज को ऐसी–ऐसी भयानक तथा उपचार रहित बीमारियों का प्रकोप झेलना पड़ रहा है जिनकी पहले कभी कल्पना तक भी नहीं की गई थी।

प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए हमें प्राचीनतम ऋषि–मुनियों की शरण में जाने की आवश्यकता है। उसी आधार पर पर्यावरण प्रदूषण की इस समस्या से निपटने का सबसे कारगर उपाय अग्निहोत्र अर्थात् हवन है। सीधी सी बात है कि हवन के द्वारा जहरीली गैसों का शमन होता है। ज्यों–ज्यों वैज्ञानिक इस बात पर और अधिक खोज कर रहे हैं त्यों–त्यों ही उनके सामने हवन का महत्व और अधिक उजागर होता चला जा रहा है। अमेरिका में अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी की स्थापना होना इस बात का प्रमाण है। यही नहीं वहाँ पर 'फाइव फील्ड पाथ' नाम से एक संस्था का गठन भी किया गया है। फाइव फील्ड पाथ अर्थात् यज्ञ, तप, दान, कर्म और स्वाध्याय। जर्मन के विद्वान् बर्थोल्ड मोनिका जेहले यज्ञ पर बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त चिल्ली और पोलैण्ड में भी यज्ञ अर्थात् हवन के ऊपर बहुत ही महत्वपूर्ण खोजें हो रही हैं तथा उन्हें यज्ञ के द्वारा पर्यावरण शुद्धि के बहुत ही महत्वपूर्ण सूत्र हाथ लगे हैं। कुछ लोगों का यह मानना है कि हवन में जो भी सामग्री डाली जाती है वह अग्नि में भस्म होकर समाप्त हो जाती है मगर वास्तविक तथ्य यह नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के तीसरे समुल्लास का एक प्रसंग यहाँ पर देना उपयुक्त रहेगा। वहाँ पर प्रश्न उठाया गया–'होम से क्या उपकार होता है उत्तर–सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न–चन्दनादि घिस के किसी को लगावे वा घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

उत्तर–जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो! जहाँ होम होता है वहाँ से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्न–जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा।

उत्तर–उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकालकर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न–भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल पर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

प्रश्न–तो मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर–मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जाएं और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेद पुस्तकों का पठन–पाठन और रक्षा भी होवे।

प्रश्न–क्या इस होम करने के बिना पाप होता है?

उत्तर–हाँ। क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए। और खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके। इससे अच्छे पदार्थ खिलाना पिलाना भी चाहिए परन्तु उससे होम अधिक करना उचित है इसलिए होम का करना अत्यावश्यक है।

प्रश्न–प्रत्येक मनुष्य कितनी आहुति करे और एक–एक आहुति का कितना परिमाण है?

उत्तर–प्रत्येक मनुष्य को सोलह–सोलह आहुति और छः छः मासे घृतादि एक–एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून चाहिए और जो इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा है। इसीलिए आर्यवरशिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए.....,

सत्यार्थप्रकाश के उपरोक्त प्रसंग से हमारे सामने यज्ञ के सम्बन्ध में बहुत से सूत्र हाथ लगते हैं। बहुत से लोगों का कथन है कि यह बात मान भी ली जाए कि यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है मगर मन्त्र बोलने की क्या आवश्यकता है? मन्त्र बोलने से वेदादि सत्य शास्त्रों के पठन–पाठन की प्रक्रिया सुरक्षित रहती है....उनमें निहित प्रार्थनाएं सफलीभूत होती हैं तथा पवित्र वेद–मन्त्र बोलने से ध्वनि प्रदूषण भी समाप्त होता है। उसी प्रकार जहाँ तक अग्नि में अनेक प्रकार के पदार्थ जलाकर उन्हें नष्ट करने की बात कही जाती है मगर पदार्थ विद्या के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता है बल्कि वह अपना स्वरूप बदल लेता है। जो सामग्री और घृतादि हम यज्ञ में डालते हैं वे नष्ट नहीं होते हैं बल्कि सूक्ष्म होकर वातावरण में फैल जाते हैं। इस बात का प्रमाण हमें इस बात से स्वतः मिल जाता है कि दूर कहीं जाने वाला व्यक्ति भी कह उठता है कि सामग्री और घृत की सुगन्धि आ रही है जरूर कहीं पर हवन हो रहा है। पदार्थ अग्नि का स्पर्श पाकर केवल अपना स्वरूप ही नहीं बदलता है बल्कि अग्नि का स्पर्श पाने से वह और अधिक शक्तिशाली भी हो जाता है। इस बात का प्रत्यक्ष करने के लिए मिर्च का उदाहरण बहुत उपयुक्त है। एक मिर्च खाने से उसका तीखापन केवल एक व्यक्ति को ही कष्ट दे सकता है मगर यदि उसी मिर्च को हम अग्नि में डाल दें तो वह मिर्च अनेक लोगों के कष्ट का कारण बन जाएगी। इसका कारण यही है कि अग्नि का स्पर्श पाकर मिर्च का तीखापन और अधिक शक्तिशाली बनकर वातावरण में फैल गया जिससे सभी व्यक्तियों को उसके तीखेपन का अनुभव हुआ। सुगन्धित पदार्थ जलाने से सुगन्धि फैलती है तथा दुर्गन्धित पदार्थ जलाने से दुर्गन्धि फैलती है इस तथ्य से कोई मना नहीं कर सकता है। इस सुगन्ध और दुर्गन्ध का हमारे पर्यावरण पर तथा हमारे शरीर आदि पर भी प्रतिकूल या अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसीलिए कहा गया है कि जो व्यक्ति वातावरण में दुर्गन्धि तो फैलाता है मगर उतनी मात्रा में या उससे अधिक सुगन्धि नहीं फैलाता है वह निश्चित रूप से पाप का भागी बनता है। जब तक सभी अपने इस नैतिक दायित्व का निर्वहन करते रहे तब तक यह पर्यावरण की समस्या पैदा नहीं हुई थी मगर जब व्यक्ति अपने इस नैतिक दायित्व को भुला बैठा तभी से अनेक प्रकार के रोग और शोक पैदा हो गए हैं। इसका निदान हमें अग्निहोत्र को अपनाने से ही करना होगा।

कुछ वर्ष पूर्व भोपाल में गैस काण्ड हुआ जिससे हजारों लोग जहरीली गैस से प्रभावित हुए मगर उसी शहर में एक ऐसा परिवार भी था जो रातभर यज्ञ करता रहा और उस यज्ञ की वायु के प्रभाव से ज़हरीली गैस का प्रभाव उस परिवार पर नहीं हुआ बल्कि वे सभी पूर्णरूप से सुरक्षित बच गए। वास्तव में यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है तथा इससे अद्भुत लाभ होता है इसीलिए इसे हमारे मनीषियों ने धार्मिकता के साथ जोड़ दिया है ताकि यज्ञ की यह प्रक्रिया अवाध गति से चलती रहे। कुछ लोग इस प्रकार की बात भी कहते हैं कि हवन से तो कार्बन–डाई–ऑक्साईड नामक गैस पैदा होती है। इसमें सन्देह नहीं कि लकड़ियाँ जलाने से कार्बन–डाई–ऑक्साईड गैस पैदा होती है तथा वनस्पतियों का आहार होने के कारण इसका भी उचित मात्रा में पैदा होना आवश्यक है मगर ध्यान देने वाली बात तो यह है कि हवन केवल लकड़ियाँ जलाना भर नहीं है बल्कि उसमें घृत तथा अनेक प्रकार की औषधियाँ एवं सुगन्धित पदार्थ डाले जाते हैं। इसलिए यदि पूरी विधि एवं विशुद्ध रूप से यज्ञ किया जाए तो उससे 'फार्मिक आलडीहाइड' नामी एक गैस निकलती है जो बहुत ही गुणकारी है। यही नहीं आजकल तो यज्ञ का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। ज्यों–ज्यों नई–नई खोजें हो रही हैं त्यों–त्यों हवन यज्ञ की महानता के बारे में पता चल रहा है। विशेष प्रकार की सामग्री के द्वारा हवन करने से कई प्रकार के रोगों को दूर किया जा रहा है। आयुर्वेद की औषधियाँ तो इस अग्नि–विज्ञान पर ही आधारित हैं। विभिन्न प्रकार की सामग्री आदि जलाने से पर्यावरण को पूर्णरूप से प्रदूषण रहित बनाया जा सकता है।

वास्तव में हमारे प्राचीनतम ऋषि–मुनियों

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

www.thearyasamaj.org

वृष्टि कारक यज्ञ

● डॉ. रोचना भारती

यज्ञ मीमांसाकार 'पं. वेणीराम शर्मा गौड़' ने यज्ञ की विभिन्न निरुक्तियां की हैं जिनसे यज्ञ के पर्यावरणीय प्रभाव पर प्रकाश पड़ता है, उनमें से वृष्टि से सम्बन्धित एक निरुक्ति यह है कि–

येन सदुनिष्ठानेन इन्द्रप्रभृतयो देवाः सुप्रसन्नाः
सुवृष्टिं कुर्युस्तत् यज्ञपदाभिधेयम्।

(जिस उत्तम अनुष्ठान से सूर्यादि देवगण अनुकूल वृष्टि करें उसे वृष्टि यज्ञ कहते हैं।)

अपौरुयेष वेद वाणी के अनुसार वृष्टि यज्ञ द्वारा वर्षा कराई जा सकती है। ऋषि तथा अग्निदेवता वाले मन्त्र में कामना की गई है:–

स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमानर्माणम्।
स नः सहस्रिणीरिषः।।
–ऋग्वेद 02/06/05 सोमाहुतिर्भार्गव

(वह यज्ञ (अग्नि) होम लोगों के लिये सूर्यप्रकाश तथा मेघमण्डल से वर्षा करता है।)

पवमान सोम देवता युक्त कविर्भार्गव ऋषि वाले मन्त्र में कहा गया है कि वर्षा के लिये यज्ञ में घृत की धारा टपकाएं:–

घृतः पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः।
अस्मभ्यं वृष्टिमापव।।
–ऋग्वेद 9/49/3

ऋग्वेद में ही अन्यत्र (10/18/10,11) में कहा गया है कि **यज्ञ अग्नि में 11 सहस्र घृत सहित चरु की आहुति देने से अग्नि अनेक ज्वालाओं से बढ़ता है, वह तीव्र होकर आकाश से वृष्टि कराता है। यजुर्वेद** (01/16) में यज्ञ को **वर्षवृद्धम्**–वर्षा का बढ़ानेवाला कहा गया है। **सामवेद 159वें** मन्त्र में भी कहा गया है–

अयन्त इन्द्रो सोमो निपूतो अधि बर्हिषि।
एहीमस्य द्रवा पिब।।

जब मनुष्य वृष्टि के हेतु इन्द्रयाग के लिये सोम को तैयार करे तब परमेश्वर की स्तुति करके अग्नि में सोम का हवन करे, जिससे इन्द्र नामक अग्नि दौड़ जावे और सोम का पान कर वर्षा का हेतु हो। अथर्ववेदीय (4/15) 'वृष्टि सूक्त' के अंतिम मन्त्र में ऋषि अथर्वा का आदेश है कि–

तन्वता यज्ञं बहुधा विसृष्टा! जब वर्षा की आवश्यकता हो तब अनेक प्रकार से यज्ञ करना चाहिये। – पर्जन्य वृष्टि यज्ञ, पृ. 3,4 डॉ. कमलनारायण आर्य

'महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती' ने **"मानव जीवन गाथा"** में जेहलम के प्रदेश में हुए **'वृष्टि यज्ञ'** की सफलता की बात लिखी है। पंडित भगतराम जी ने जेहलम की मंडी में सात दिन का यज्ञ करवाया था। छः दिनों तक यज्ञ चलता रहा, सातवें दिन कुछ बादल थे, **'यजुर्वेद'** का यह मन्त्र पढ़ा जा रहा था–

शंनो वातः पवतां 2 शंनस्तपतु सूर्यः।
शंनः कनिक्रद्देवः
पर्जन्यो अभि वर्षतु। – यजुर्वेद 36.10

(अर्थात् वायु हमारे लिये सुखकारी चले, सूर्य हमारे लिये सुखकारी तपे, अत्यन्त तीव्र ध्वनि करता हुआ, उत्तम गुण युक्त विद्युत रूप अग्नि हमारे लिये कल्याणकारी हो और मेघ हमारे लिये सब ओर से वर्षा करे।)

इसी भावार्थ के साथ मन्त्र पढ़े जा रहे थे कि हे प्रभो! उमड़–घुमड़कर बादल आए, बिजली चमके, समुद्र उछल पड़े, गरजते हुए बादलों से इस प्रकार वर्षा हो कि चारों ओर नदियां बहने लगें। तभी अचानक आकाश से बूंदें बरसने लगीं। यज्ञ चलता रहा, आहुतियां पड़ती रहीं, बादल गरजते रहे, बिजली चमकती रही और पूर्णाहुति से पंद्रह मिनट पूर्व ही इस तरह मूसलाधार वर्षा होने लगी कि चारों ओर जल–थल एक हो गया।"

वृष्टि यज्ञ कराने के लगभग 25 परीक्षण यज्ञ **'पंडित वीरसेन वेदश्रमी (वेद विज्ञानाचार्य)'** द्वारा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। येड्सी में गुरुकुल रामलिंग वेद श्री के **'आचार्य सुभाषचन्द्र जी'** द्वारा लातूर में 3 बार सफल वृष्टि यज्ञ हुए। अन्य अनेक स्थानों पर भी अनेक विद्वानों ने वर्षा के लिये यज्ञ किये हैं, उन्हें भी प्रायः पूर्ण रूप से या आंशिक सफलता अवश्य मिली है। इसी प्रकार अतिवृष्टि को रोकने के कतिपय परीक्षण विलासपुर, रायपुर, अलीगढ़ जिले में तथा इन्दौर, पानीपत एवं चंडीगढ़ में किये हैं। यज्ञ का फल अनेक प्रकार से शीघ्र या विलम्ब से अवश्य शुभ होता है। यज्ञ कभी निष्फल नहीं होता।

यज्ञों में व्यय सदा एक समान नहीं होता है। ऋतु, देश, काल की स्थिति के कारण न्यूनाधिक व्यय होता है और प्रभाव क्षेत्र की सीमा भी सदा एक सी नहीं होती। अन्नादि से बहुत अधिक गोघृत, यज्ञ की विशिष्ट समिधाएं, सामग्री, नारियल के गोलों में शक्कर, शहद, मेवा, खीर, मावा, तिल, जौ आदि पदार्थों को भरकर वृष्टि की कामना से यज्ञवेदी में समर्पित करने से शीघ्र वर्षा होती है।

वर्षा यज्ञ की सफलता के चिह्न इस प्रकार हैं–

★ आकाश में निस्तब्धता के परमाणुओं का बाहुल्य और नितांत शांति दिखाई देती है।

★ वायु बिल्कुल बन्द हो जाती है, पत्ता तक नहीं हिलता।

★ अग्नि की लाल ज्वालाएं ऊपर को छलांग लगाती हैं।

★ आकाश में सफेद–सफेद बादल दिखते हैं।

★ तितरी बदली वर्षा के आगमन की सूचक है।

★ अग्नि का रंग कैर (करीट) की लकड़ी से लाल स्वर्ण की भांति होता है और 10–12 फुट ऊपर को, कुण्ड से 3 फुट ऊपर उठती है।

★ लालिमा के साथ बीच में काले वर्ण की रेखाएं ज्वाला में होती हैं, यह घनघोर घटाओं के चिह्न हैं।

★ सोमरस वनस्पति से वर्षा शीघ्र होती है।

★ घृत की धारा बादल बनाने में बहुत सहायक होती है।

★ जब अग्नि का रंग सफेद हल्के पीतवर्ण में मिला हो, तो वह वर्षा के आने का सूचक है।

★ **'मेघ राग'** से मेघों का संचय, **'मन्त्र ध्वनि'**, **'शक्ति'** तथा **'स्वाहा'** की ध्वनि का उच्चस्वर का प्रभाव भी मेघों के संचय पर होता है।

★ यज्ञ में ध्वनि विस्तारक यन्त्र (लाउडस्पीकर) का मुख आकाश की ओर रख कर मेघों की गड़गड़ाहट की ध्वनि का उपयोग करने से बादल बनने की स्थिति में बहुत अनुकूल प्रभाव होता है।

यदि कभी यज्ञ से वर्षा का प्रभाव दृष्टिगोचर न हो, तो उसमें यज्ञ की असफलता नहीं, अपितु अपने प्रयोग की न्यूनता का ही कारण होता है, ऐसा मानकर अपनी न्यूनता पर दृष्टिपात करके उसको ही पूर्ण करना चाहिये।

(पं. वीरसेन वेदश्रमी। साभार–पर्यन्य वृष्टि–वैज्ञानिक प्रयोग; डॉ. कमल नारायण आर्य)

'डॉ. ब्रह्ममुनि जी' के आह्वान पर परली में दिनांक 23 अगस्त 2012 से सात दिनों तक लोहिया परिवार ने विश्वकल्याण पर्जन्य वृष्टि यज्ञ का विशाल रूप में आयोजन किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य **'पं. कमलनारायणजी एवं पं. शिवकुमार जी आर्य'** द्वारा लगभग सात दिनों तक विधिवत् यज्ञ चलता रहा। परमात्मा की कृपा से तीसरे दिन ही जोरदार वर्षा हुई और सभी श्रद्धालुओं में खुशी की लहर छा गई। इसी प्रकार आगे भी तीन बार पर्जन्य वृष्टि हुई। (वैदिक गर्जना; सितम्बर 2012)

वेदों में यज्ञ द्वारा वृष्टि के लिये अनेक मन्त्रों में कहा गया है कि–

समानमेतदुदकमुच्चैत्यव चाहभिः।
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं
जिन्वन्त्यग्नयः।। ऋग्वेद–1.164.51

(यह जल समान रूप से दिनों के अनुसार ऊपर जाता है और नीचे आता है। बादल भूमि को तृप्त करते हैं, यज्ञाग्नियां आकाश को तृप्त करती है अर्थात् भूमिष्ठ जल वृष्टि करने के लिये ऊपर ले जाती हैं।)

आ ते सुपर्णा अमिनन्तं एवैः कृष्णो नोनाव वृषभो यदीदम्।
शिवाभिर्न स्मयमानाभिरागात् पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा।।
–ऋग्वेद 1.79.2

(हे यज्ञाग्ने! तेरी ज्वालाएं गतिशील वायु के द्वारा बादल को प्रताड़ित करती हैं, तब वह काला वर्षा करने वाला बादल शब्द करने लगता है। जब ऐसा होता है तब सुखदायक मुस्कुराती हुई युवतियों के समान बिजलियों के साथ वह बादल आता है (मिहः पतन्ति) मेह बरसाता है और (आभ्रा स्तनयन्ति) जल भरे मेघ गरजते हैं।)

हवन–यज्ञ की राख व धुएं के प्रयोग के अच्छे व चकित करने वाले परिणाम हैं। जहाँ–जहाँ बसें, ट्रक, टेम्पो आदि रुकते हैं, वहाँ पेट्रोल, डीजल आदि के धुएं के कारण पेड़–पौधों के पत्ते काले पड़ जाते हैं तो हवन के धुएं का असर उन पर क्यों नहीं पड़ सकता? पं. सत्यानन्द जी वेद वागीश ने भुज (कच्छ) में एक अमरूद का पेड़ जिसमें न फूल आते थे न फल, ऐसे पेड़ की जड़ों में यज्ञ की राख डालनी शुरू कर दी। उस राख से पेड़ की जड़ों में से असंख्य कीड़े बाहर निकल आए जो उसकी जड़ और मिट्टी की उत्पादकता को नष्ट कर रहे थे।

इसी तरह एक नीम के पेड़ पर यह प्रयोग किया, वह भी कुछ दिनों में दुगुना बढ़ गया।

कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिकों को और कई किसानों को यह प्रयोग बताया, वे सभी इस तरह यज्ञ के प्रभाव को मानते हैं। पुणे के **'एम.जे.पी. कृषि विश्वविद्यालय'** के **'डॉ. बी.जी. भुजबल'** ने यज्ञ के वायुमंडल का अंगूर के उत्पादन पर तथा अंगूरों से मुनक्का, किशमिश बनाने के लिए उपयोग किया उसमें भी अंगूरों की मिठास में और उसके शुष्कीकरण में पूरी तरह से सफलता मिली। साथ ही फसल की क्षति शून्य थी, कोई कीड़ा नहीं लगा था।

(जनवरी 1981 के नवनीत (मुम्बई) के विज्ञान वार्ता स्तम्भ में **'अन्वेषी'** द्वारा संकलित), अमेरिका स्थित 'अग्निहोत्री विश्वविद्यालय' में यज्ञ के परीक्षण किये गए हैं, उनमें मन्त्रोच्चार और घी की आहुति से फसलों को चौगुना करने में सफलता मिली है। यह भी पाया गया है कि खेतों पर नियमित रूप से यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है और पौधे तेजी से बढ़ते हैं।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

दण्डी विरजानन्द विषयक अतिरिक्त जानकारी

● डॉ. भवानी लाल भारतीय

दण्डी विरजानन्द तथा उनके गुरु पूर्णानन्द सरस्वती के विषय में हिन्दी के कवि नवनीत चौबे ने निम्न कवित्त लिखा–

विरजा किनारे बसि ब्रज जन दीक्षा दई,
पूर्णानन्द गुरु सों समग्र ज्ञान पायो है।
नवनीत सुअन सरस्वती पुलिन जन्म,
जन्म अंध विरजू सात वर्ष को सिधायो हो।
योग तप बल तें अधीते वेद वेद अंग,
संग शिवानन्द ब्रह्मचारी मित्र पायो हो।
संवत् अठारह सो तेरह में कृष्णानन्द,
सामवेदी दण्डीघाट को बनवायो हो।।

इस पद्य से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं–दण्डी विरजानन्द ने स्वामी पूर्णानन्द से ज्ञान प्राप्त किया तथा अपने योग और तप के बल से वेदों तथा वेदाङ्गों का अध्ययन किया। जन्मान्ध (क्या दण्डीजी जन्मांध थे या उनकी नेत्र ज्योति बाद में गई थी?) विरजू (दण्डीजी का जन्मनाम ब्रजलाल) ने सात वर्ष की आयु में गृह का त्याग किया। शिवानन्द ब्रह्मचारी (?) उनके मित्र थे तथा सामवेदी कृष्णानन्द ने संवत् 1813 (1756 ई.) में यमुना के तट पर दण्डीघाट बनवाया।

दण्डीजी के शिष्यों तथा रंगाचार्य के शिष्यों के बीच जो व्याकरण विषयक शास्त्रार्थ हुआ उसका उल्लेख नवनीत कवि ने निम्न कवित्त में किया है–

वृन्दावन बीच रंगाचारी रंग मंदिर में
ताको शिष्य लल्लूलाल विप्र अभिमानी भौ।
नवनीत तासो गंगादत्त को विवाद छिड़्यो
अधिकरण षष्ठी तत्पुरुष प्रमाण भौ।
दक्षिणा दे सेठहु ने सम्मति कराई झूठी
विद्यावाद वाराणसी पुरी वेदवानी भौ।
आगरे कलक्टरी न्याय ना मिल्यो तौ
प्रज्ञाचक्षुहु प्रतिज्ञा काज उद्यत अमानी भौ।।

उक्त पद्य में निम्न संकेत हैं–वृन्दावन में रंगाचार्य के शिष्यों से दण्डीजी के शिष्य गंगादत्त चौबे ने 'अजाद्युक्ति' में षष्ठी तत्पुरुष है या सप्तमी तत्पुरुष, इस विषय पर शास्त्रार्थ किया। जब रंगाचार्य के शिष्य इसमें पराजित हुए तो सेठ राधाकृष्ण ने धन (दक्षिणा) का प्रलोभन देकर काशी के पण्डितों से स्वपक्ष में व्यवस्था लिखवा ली। दण्डीजी ने इस कपटपूर्ण व्यवहार की शिकायत आगरा के अंग्रेज कलेक्टर से की किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। शास्त्रीय वाद में भला अंग्रेज कलेक्टर क्या हस्तक्षेप करता? अतः प्रज्ञाचक्षु दण्डीजी ने निष्कर्ष निकाला कि अष्टाध्यायी और महाभाष्य को ही व्याकरण में प्रमाण मानना चाहिए।

दण्डी विरजानन्द के तेजस्वी व्यक्तित्व का ओजपूर्ण चित्रण कवि नवनीत ने निम्न पद्य में किया–

उन्नत ललाट बल बहुल विशाल मुण्ड,
अक्षमाल भाल भव्य चंदन त्रिपुण्ड्री ने।
नवनीत प्यारे परपच्छ गिरि पच्छन पै,
वज्राघात डिंडिम नाम खलखण्डी ने।।
सम्प्रदायवाद वेदविहित विवर्जित पै,
सासन विदेसिन को नासन प्रचण्डी ने।
गोरे के अगारी उद्दण्ड भै उठाय दण्ड,
चण्ड है प्रतिज्ञा करी प्रज्ञाचक्षु दण्डी ने।।

अर्थ–दण्डीजी का उन्नत ललाट है, वे प्रचण्ड शक्ति युक्त हैं, गले में रुद्राक्ष की माला तथा मस्तक पर त्रिपुण्ड्र (शैव सम्प्रदाय में स्वीकृत) है। उनकी वज्र सरीखी वाणी वैष्णावादि प्रतिपक्षी सम्प्रदायों पर उसी प्रकार प्रहार करती है जिस प्रकार देवराज इन्द्र का वज्र पक्षधारी पर्वतों (पुराणों में प्रसिद्ध है कि पुराकाल में पर्वतों के भी पंख होते थे, जिन्हें इन्द्र ने अपने वज्र से काट डाला) पर प्रहार करता है। दण्डीजी ने वेद विवर्जित सम्प्रदायवाद को नष्ट करने के लिए अपने हाथ में वाग्दण्ड को तो धारण किया ही, उद्दण्ड गोरों (ब्रिटिश) के नाश करने की प्रचण्ड प्रतिज्ञा भी की।

मथुरा में आकर दण्डीजी द्वारा पाठशाला स्थापित करना तथा वहाँ पढ़े दयानन्दादि शिष्यों का उल्लेख निम्न पद्य में देखें–

आय मथुरा में शिष्य मण्डली बुलाय लीनी
आपने हिय के भाव कहि समुझा गये।
कवि नवनीत मथुरा के सम्प्रदायवादी
सुन सुन वचन सकुचि सरमा गये।
गंगादत्त है जो रंगाचारी मत खण्डन ते
पुस्तक रंगोक्तिपरिभावन बना गये।
दयानन्द ही ने चरण पादुका पकरि लीनी
दया कर दर्शन के दर्शन करा गये।।

अर्थ–मथुरा में आकर दण्डीजी ने पाठशाला स्थापित की जहाँ उनका शिष्य समुदाय आ जुटा। दण्डीजी ने अपने हृदयस्थ भावों को शिष्यों में प्रेषित कर दिया। दण्डीजी के प्रखर शब्दों को सुनकर वैष्णावादि सम्प्रदायों के अनुयायी संकुचित हो लज्जित हो गये। उनके प्रखर शिष्य गंगादत्त ने रंगाचार्य के मत के खण्डन में 'रंगोक्तिपरिभावन' नामक ग्रन्थ लिखा तथा उनके अन्यतम शिष्य दयानन्द ने दीक्षान्त के समय गुरु की चरण पादुकाओं का स्पर्श कर उन्हें नमन किया। दण्डीजी का ही प्रताप था कि स्वामी दयानन्द को दर्शनशास्त्रों के रहस्यों का सम्यक् ज्ञान हुआ।

दण्डीजी की शिष्यमण्डली की जानकारी प्रो. भीमसेन शास्त्री आदि जीवनी लेखकों ने दी है। इन शिष्यों में प्रमुख निम्न थे–

1. अंगदराम, 2. बुद्धसेन, 3. उदयप्रकाश–महर्षिजी के वरिष्ठ सहपाठी, किन्तु सिद्धान्तों में उनके प्रतिद्वन्द्वी, कुछ काल तक फर्रुखाबाद की पाठशाला में अध्यापन किया। 4. युगलकिशोर–दण्डीजी की मृत्यु के पश्चात् उनके स्थान (गद्दी) को ग्रहण करने वाले। 5. गंगादत्त चौबे–व्याकरण के अप्रतिम विद्वान् जिनकी व्याकरण विषयक गर्वोक्ति थी–

पलायध्वं पलायध्वमं भो भो दिग्गज तार्किका।
गंगादत्तः समायातो वैयाकरण केसरिः।।

हे दिग्गज व्याकरण के विद्वानो! भाग जाओ, भाग जाओ। तुम्हें शास्त्रार्थ समर में पराजित करने के लिए वैयाकरण केसरी गंगादत्त आ गया है। 6. रंगदत्त–रंगाचार्य के शिष्यों से शास्त्रार्थ करने में पं. गंगादत्त के साथ थे। 7. रमणलाल गोस्वामी, 8. श्यामलाल पण्डा, 9. पं. बनमालीदत्त चौबे, 10. नवनीत चौबे, 11. ग्वाल कवि, 12. महर्षि दयानन्द।

दण्डीजी के द्वारा उपदिष्ट चतुःसूत्री–

1. मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है।
2. विधवा विवाह शास्त्र सम्मत है।
3. मृतक श्राद्ध वेदविरुद्ध है।
4. पतितों की शुद्धि शास्त्र सम्मत है।

8/423 नन्दनवन,
जोहापुर (राजस्थान)

☞ पृष्ठ 05 का शेष

पर्यावरण एवं उसकी ...

ने जो सिद्धान्त स्थापित किए हैं वे सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक हैं। आज भी हमें उन्हीं सिद्धान्तों को अपनाने की जरूरत है। आज अमेरिका जैसे देशों के चिन्तकों को भी हवन, नीम, हल्दी तथा गाय के दूध आदि की महत्ता का पता चल रहा है तथा वे इसे अपना भी रहे हैं। हमारे देश के वासी गाय को माँ कहकर सम्बोन्धित करते हैं। संभवतः विदेशी लोगों को यह बात बहुत अजीब लगती होगी कि भारतवासी एक पशु को माँ कहते हैं। मगर अब जब उनके सामने भी गाय के दूध, दही, घी, गोबर तथा स्वास आदि की गुणवत्ता प्रत्यक्ष हुई तो उन्हें इस रहस्य का स्वतः ही पता चल गया। वास्तव में इन शाश्वत् एवं सार्वभौमिक नियमों को अपना कर ही हम सभी समस्याओं से निजात पा सकते हैं। यह ठीक है कि आज पर्यावरण बहुत अधिक प्रदूषित हो गया है मगर इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है बल्कि अग्निहोत्र के द्वारा इसका समाधान करने की दिशा में दृढ़ता के साथ कार्य करने की जरूरत है। विधिवत् यज्ञ की प्रक्रिया को अपनाकर निश्चित रूप से इस समस्या को जड़मूल से समाप्त किया जा सकता है। शतपथ ब्राह्मण में इस यज्ञ को संसार का श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है तथा वहाँ पर इसका बहुत सूक्ष्मता के साथ विवेचन भी किया गया है। ऋषि का कथन है कि हवन में जो पदार्थ डाले जाते हैं उसके तीन भाग हो जाते हैं। पहला भाग तो राख के रूप में नीचे रह जाता है। दूसरा भाग अग्नि का स्पर्श पाकर वातावरण में फैलकर पर्यावरण को सुगन्धित करता है और तीसरा भाग हमारे सूक्ष्म शरीर पर एक संस्कार के रूप में बैठ जाता है। इसलिए इस यज्ञ को लोक–परलोक सुधारने वाला बताया गया है। आज दुर्गन्धयुक्त भयानक गैसों से पर्यावरण प्रदूषित होकर अनेक प्रकार के दुःखों का कारण बन गया है तथा इस दुःख विशेष की स्थिति को ही हमारे शास्त्रों में नरक कहा गया है। इसके विपरीत सुख की स्थिति विशेष ही स्वर्ग है। यज्ञ को स्वर्ग देने वाला इसीलिए कहा गया है क्योंकि इसके प्रचलन से हम स्वर्ग जैसा वातावरण बना सकने में समर्थ हो सकते हैं।

यज्ञ को धार्मिकता के साथ जोड़ने का सबसे बड़ा यही कारण था ताकि हमारे देशवासी कहीं इसका त्याग न कर बैठें मगर अब जब धर्म भी व्यवहारिकता से दूर होने लगा है तो धर्म का यह अनिवार्य अंग भी हमसे छूटता चला जा रहा है और इसका कुपरिणाम पर्यावरण प्रदूषण के रूप में आज हमारे सामने है। महाभारत में भीष्मपितामह महाराजा युधिष्ठिर को इस यज्ञ की महत्ता के बारे में बहुत ही सुन्दर एवं सार्थक उपदेश देते हैं। उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र का कभी त्याग नहीं करना चाहिए, वेद स्वाध्याय का कभी त्याग नहीं करना चाहिए तथा तपस्वी ब्राह्मण की कभी निन्दा नहीं करनी चाहिए। इनका त्याग करने से ही आज प्रतिदिन नई से नई समस्याएं पैदा हो रही हैं। फिर निष्कर्ष रूप में भीष्म जी कहते हैं कि धर्मराज! इस यज्ञ से बढ़कर कोई निधि नहीं है, इस यज्ञ से बढ़कर कोई दान नहीं है और इस यज्ञ से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। भीष्म जी की बातें मनन और चिन्तन करने योग्य हैं। यज्ञ हमारी सबसे बड़ी निधि है और समस्त निधियाँ तो यहीं पर रह जाएगी मगर यह पुण्य रूपी निधि अवश्य ही हम सबके साथ जाएगी। इस यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि होगी और क्योंकि इसकी शुद्धि से ही प्राणी मात्र का कल्याण होता है इसलिए इस यज्ञ से बढ़कर कोई और दान व धर्म नहीं हो सकता है। आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एक अभिशाप बनकर हमारे सामने आ उपस्थित हुई है मगर हमें गहराई से चिन्तन करके इस तथ्य को मानना होगा कि गलत जीवन पद्धति के कारण हमने स्वयं ही इस अभिशाप का निर्माण किया है तथा सही जीवन पद्धति को अपनाने से हम इसका निराकरण करने में भी स्वंय ही समर्थ हैं। बस आवश्यकता है तो पवित्र भावना, दृढ़ संकल्प एवं ठोस कार्यप्रणाली के कार्यन्वयन की।

–महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दर नगर,
जि. मण्डी (हि.प्र.)

www.thearyasamaj.org

विज्ञान का ज्ञान–ब्रह्मज्ञान

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

ईश्वरीय ज्ञान ब्रह्मज्ञान को सर्वोपरि परन्तु सृष्टि को मिथ्या मानने वालों तथा अनीश्वरवाद के पोषक वैज्ञानिकों में एक तीव्र मतभेद रहता है। अलग–अलग मत मतान्तरों को मानने वाले ईश्वर के स्वरूप और कार्यों की अपनी–अपनी परिकल्पनाओं के समक्ष वैज्ञानिक अनुसंधानों पर सदैव प्रश्न चिह्न लगाते रहे हैं। फिर चाहे स्वयं को सबसे अधिक प्रगतिशील मानने का दंभ भरने वाले ईसाई चाहे पृथ्वी को गोल बताने पर वैज्ञानिकों को दंड दें या फिर रेल के भाप के इंजन को शैतान की खोज बताकर बाद में शर्मसार होते रहें या फिर खुदा का सातवें आसमान पर बताने वाले हों या अन्य। सभी का मतभेद वैज्ञानिक अनुसंधानों से अपने–अपने समय पर रहा है। वहीं दूसरी ओर अपनी नित नई खोजों से उत्साहित और अपने अनुसंधानों के वैज्ञानिक आधार के कारण यह वैज्ञानिक वर्ग इन अलग–अलग मत मतान्तरों द्वारा दिए ईश्वर के स्वरूप को कोरी कल्पना बता कर खारिज करते हैं। वैज्ञानिक दल तो सीधे आरोप लगाता है कि ईश्वर का डर दिखा कर ये अपनी मनमानी प्रथायें लोगों का शोषण करने के लिए चला रहे हैं और इनका कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि आखिर कौन ठीक है, सत्य क्या है? सत्य को जानने के लिए हमें पूर्णतया वैज्ञानिक सत्य सनातन वैदिक धर्म के सिद्धांतों को समझना होगा। आखिर इन वैज्ञानिकों और मत मतान्तरों में से कौन ठीक है। सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि दोनों ही अर्धसत्य के शिकार हैं। इसका उत्तर खोजने के लिए हमें संपूर्ण सत्य जानना होगा। विज्ञान की कोई भी खोज पहले से चले आ रहे नियमों का अनुसंधान मात्र ही तो हैं जैसे वैज्ञानिकों के खोजने मात्र से ही तो पृथ्वी गोल नहीं हो गई वह तो पहले से ही गोल थी। वैज्ञानिकों ने तो ईसाई मत के सिद्धांत का खंडन किया कि पृथ्वी चपटी है। ठीक इसी प्रकार पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने से दिन और रात का बनना, सूर्य का पूर्व में उदय होना और पश्चिम में अस्त होना आदि–आदि सृष्टि के निर्माण के समय से ही स्थापित नियमों का वैज्ञानिक आधार मात्र ही तो हैं।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन वैज्ञानिकों ने कोई नया नियम बनाया अपितु अपने अनुसंधान से केवल उन सनातन पुरातन ईश्वरीय नियमों के आधार को खोजने का प्रयास किया। उससे कुछ अधिक देखें तो अपने अनुसंधान से इन पूर्व स्थापित नियमों द्वारा मानव मात्र की सुविधाओं के लिए साधन एकत्रित किए। जैसे पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति, प्रत्येक क्रिया की बराबर व विपरीत प्रतिक्रिया आदि–आदि पर आधारित वैज्ञानिक खोजों से बने सुविधा के उपकरण।

आखिर इन सब नियमों का नियम क्या है? सूत्रों का सूत्र कौन है? या फिर कहें वैज्ञानिक खोजों का आधार क्या है? इनका उत्तर अथर्ववेद के मंत्र **'सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात् स विद्यात् ब्राह्मणं महत्।'** में समाहित है अर्थात् जो पुरुष इस **'सूत्रस्य सूत्रं'** यानी सूत्र के भी सूत्र को जान ले वही बड़े ब्रह्म, ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान को जान पायेगा। विज्ञान के जितने भी नियम हैं वह वैज्ञानिकों के बनाए हुए नहीं अपितु केवल मात्र खोजे हुए हैं। विज्ञान के इन नियमों को बनाने वाला तो इस सृष्टि का रचयिता और सृष्टि को ईश्वरीय नियमों में चलाने वाला वह परमपिता परमेश्वर ही है। विज्ञान के सभी नियम, सभी शाखायें भौतिकी, रसायनी, गणित आदि–आदि चाहे देखने में अलग–अलग प्रतीत होती हों लेकिन अंततः छोटे–छोटे नदी नालों की तरह ज्ञान के अथाह सागर में ही जाकर मिल जाती हैं। यह ज्ञान का अथाह सागर ही तो ईश्वरीय ब्रह्म ज्ञान है और यही **'सूत्रस्य सूत्रं'** अर्थात् धागों का वह धागा है जिसने सभी को एक साथ पिरोया हुआ है। इसीलिए एक अन्य वेदमंत्र में कहा गया **'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति'** अर्थात् ये समस्त सृष्टि, सृष्टि के नियम, इन नियमों के नियम उस सृष्टिकर्ता ईश्वर की रचना ही तो हैं जो ना कभी मरती है और ना ही बूढ़ी होती है अर्थात् ईश्वरीय नियमों में कदापि कोई परिवर्तन नहीं होता और इसीलिए हम कह सकते हैं कि ईश्वरीय ब्रह्म ज्ञान समस्त वैज्ञानिक अनुसंधानों का ज्ञान व आधार है। वैज्ञानिक अनुसंधान और ब्रह्म ज्ञान दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान तो सत्य ईश्वरीय सिद्धान्तों व नियमों की पुष्टि करने का साधन हैं।

602 जी.एच. 53 सैक्टर 20
पंचकूला, हरियाणा
मो. 09467608686, 09878748899

दूध का कर्ज

● राजेन्द्र प्रसाद आर्य

कत्लखाने के बाहर खूटे में बंधी एक गाय ने पास खड़े अपने बछड़े से कहा कि बेटा आज रात में तू हमारा जितनी दूध पीना चाहे पी ले, क्योंकि कल सूर्योदय के साथ ही कसाई मेरी हत्या कर मेरे शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर उसे डिब्बे में भरकर विदेश भेज देंगे।

इतना सुनकर बछड़े ने अपनी माँ से कहा कि माँ आखिर वे ऐसा क्यों करेंगे जबकि तुमने तो अपना दूध उन्हें पिलाया है?

इस पर गाय ने जवाब दिया हाँ हमने तो अपना दूध सबको बिना भेद भाव के पिलाया है, उस कसाई को भी जो कल सुबह हमारा कत्ल करेंगे। मेरा दूध पीकर ही वे बल, विद्या बुद्धि और शक्ति अर्जित कर पाये हैं, पर बेटा वे मनुष्य है उन्हें मनुष्य इसलिए कहा गया है क्योंकि वे मननशील हैं, पर उनमें अब मनन करने की शक्ति ही समाप्त हो गई है इसलिए वे कुछ भी कर सकते हैं।

इतना सुनकर बछड़े ने कहा कि क्या इसीलिए वे मुझे भी यहाँ लाये हैं, उन्हें हमारे बचपन पर भी कुछ तरस नही आया, मैं तो तैयार हो रहा था हल चलाकर उनके खेतों की फसलों से लहलहाने को।

तब गाय ने कहा कि बेटा उसके कई कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि अब उन्हें खेती में तुम्हारी जरुरत नही रह गई है, क्योंकि तुम्हारा स्थान ट्रेक्टर ने ले लिया है और दूसरा कारण यह है कि वे तुम्हारे कोमल और मुलायम चमड़े से क्रुम के जूते बनाकर अधिक मुनाफा अर्जित करेंगे और तीसरा एवं सबसे बड़ा कारण यह कि तुम बछड़ी नही बछड़ा हो अगर तुम बछड़ी होते तो वे तुम्हें हरगिज यहाँ नही भेजते बल्कि बड़े ही लाड़ प्यार से तुम्हें पालते ताकि तुम्हारे दूध और बच्चे से लम्बे समय तक वे व्यापार कर सकें, क्योंकि वे बहुत ही स्वार्थी हैं इसलिए चन्द पैसों के लालच में तुम्हें भी यहाँ मिजवा दिया है।

तब बछड़े ने निराश होकर पूछा माँ क्या हमारी कोई सुनने वाला नहीं है?

गाय ने कहा कि नहीं हमारी कोई सुनने वाला नहीं है क्योंकि मानवाधिकार आयोग जैसा हमारा कोई आयोग नहीं है और न तो कोई न्यायालय ही ऐसा है जहाँ हम अपनी फरियाद कर सकें। हाँ एक न्यायालय ऐसा जरूर है जहाँ हमारी फरियाद भी सुनी जायेगी और दोषी दंडित भी किए जायेंगे। तब बछड़े ने एक बार फिर पूछा कि अच्छा यह तो बताओ कि क्या इसका दुष्परिणाम उन्हें कुछ भी नहीं मिलता?

इस पर गाय ने कहा कि दुष्परिणाम मिलता क्यों नहीं अवश्य ही मिलता है। दुनिया के सभी प्राणी अपना–अपना स्वाभाविक आहार ही खाते हैं दूसरा कुछ भी नहीं, पर एक मात्र मनुष्य ही है जो अपने स्वाभाविक आहार के अलावा बड़ी तेज़ी से माँसाहार की ओर प्रवृत्त हो रहा है, हम तो केवल एक बार कत्ल किये जायेंगे पर उन्हें तो लम्बे समय तक नरक जैसी यातना भोगनी पड़ रही है।

आज का मनुष्य मुर्गियों का खून पीकर अपना खून बढ़ाना चाहता है एवं हम जैसे जानवरों के माँस को खाकर अपनी ताकत बढ़ाना चाहता है, पर उन्हें मिलता क्या है इन्हीं सब चीजों को खाकर वे नित नये–नये रोगों से ग्रसित हो जाते हैं और अल्प आयु में मृत्यु का भी ग्रास बन जाते हैं। वेद ने मनुष्य को 100 वर्ष जीने का अधिकार दिया है पर प्रकृति के विरुद्ध आचरण करने से वे कम समय तक ही जी पाते हैं। आज स्थिति क्या है? स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का मूल आधार है शाकाहार पर वे जिस तेजी से माँस–भक्षण करके नई–नई बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं उन्हीं से सारे हॉस्पीटल पटे पड़े हैं। प्राइवेट डाक्टरों के यहाँ उनकी लम्बी लाइनें लगी हुई हैं और इससे बहुत ज्यादा संख्या में एवं अपने घरों में रोग शैय्या पर पड़े–पड़े मृत्यु की बाट जोह रहे हैं। विश्व स्वास्थ संगठन (W.H.O) ने भी चेतावनी दी है कि मनुष्य के शरीर में होने वाली बीमारियों में से 159 गंभीर बीमारियाँ ऐसी हैं जिसका कारण है माँसाहार। हमारी बहुत बड़े पैमाने पर हत्या होने की वजह से उनके बच्चे दूध के बिना बिलख रहे हैं, और कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। आज पूरे विश्व में भूख और कुपोषण की वजह से उनके 5 वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु 40,000 प्रतिदिन हो रही है। फिर भी विश्व स्वास्थ संगठन की इस चेतावनी का भी उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है आखिर क्यों? मतलब साफ है चाहे जो भी भोगना पड़े, पर वे अपने लाइफ स्टाइल में कोई परिवर्तन नहीं चाहते।

तब बछड़े ने अपनी माँ से पूछा कि इतना सब कुछ देखकर भी तुम्हें उनसे शिकायत नहीं है?

तब गाय ने जवाब दिया नहीं, मुझे उन पर तरस अवश्य आता है पर कोई शिकायत नहीं है क्योंकि मैं गोमाता हूँ विधाता ने मुझे विश्वमाता का दर्जा दिया है इसीलिए मैं मरकर भी उनका कल्याण चाहती हूँ। जब वे औलाद की हत्या बेझिझक कर सकते हैं तो कुछ भी कर सकते हैं। आज प्रतिदिन लाखों की संख्या में वे अपने संतान की हत्या बिना जन्म लिये ही गर्भ में ही कर देते हैं तो फिर भला मैं कौन हूँ?

हाँ, मुझे शिकायत है अपने उन कथित गो–भक्तों से जो गौ माता की जय जैसे–नारों से पूरे वातावरण को गुंजायमान करते हैं, मन्दिरों में स्थापित मेरी मूर्तियों पर अक्षत और फूल चढ़ाने से नहीं थकते, वे भी मुझे कत्लखानों तक भिजवाने में नही हिचकिचाते। क्या यही है मेरे दूध का कर्ज जिसे वे इस प्रकार चुकता कर रहे हैं।

प्रचार मंत्री आर्य समाज,
मुजफ्फरपुर, बिहार
मो. 9835206688

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

मानव जीवन गाथा...

परिवार की वस्तुएँ हैं। हीरा भी पहले कोयला होता है, बाद में हीरा बनता है, परन्तु बनता है बहुत–से कष्ट सह कर। ऊपर से अरबों टन बोझ उसे दबाता है। नीचे से गर्मी तपाती है। करोड़ों वर्ष के तप के पश्चात् वह हीरा बन जाता है। लोग उसे फौलाद की तिजोरियों में सँभाल–सँभालकर रखते हैं। परन्तु तप से पूर्व – कोयले की दशा में यदि वह बाहर आ जाय तो उसके लिए केवल एक स्थान है, जलती हुई अग्नि और सदा के लिए राख। बोलो, हीरा बनना चाहते हो या कोयला? हीरा बनने की अभिलाषा है तो तप करो। शान्ति से, धैर्य से संकटों को सहन करो।

महर्षि दयानन्द के जीवन में तप की इस भावना और सहनशक्ति की कितनी ही घटनाएँ आती हैं। एक स्थान पर स्वामी जी ठहरे हुए थे। उनसे काफी दूर एक दूसरा साधु अपनी कुटिया बनाकर रहता था। प्रतिदिन वह स्वामी जी के पास आकर उनको गालियाँ देता; आधा–आधा घण्टा देता रहता। स्वामी जी मौन होकर सुनते रहते। एक दिन कुछ भक्तों ने कहा, "स्वामी जी! आज्ञा दीजिये इसकी मरम्मत कर दें।" स्वामी जी ने हँसकर कहा, "नहीं, इससे कुछ मत कहो। यह स्वयं ही सीधा हो जायेगा।" परन्तु वह सीधा तो नहीं हुआ, कई दिन तक वैसे करता रहा। एक दिन स्वामी जी के पास किसी भक्त ने बहुत–से सुन्दर–सुन्दर फल भेज दिये। स्वामी जी ने उनमें से उत्तमोत्तम फल निकालकर एक टोकरे में रखे। एक भक्त से बोले, "टोकरा उस सामने वाली कुटिया में दे आओ।" उसने उस कुटिया को देखा; बोला, "उसमें तो वह साधु रहता है जो आपको प्रतिदिन गालियाँ देता है।" स्वामी जी बोले, "मैं जानता हूँ, उसी के पास ले जाओ।" भक्त ने टोकरा उठाया; साधु के पास ले गया और बोला, "ये फल स्वामी दयानन्द ने भेजे हैं।" साधु ने फलों को देखा–इतने सुन्दर, इतने स्वादिष्ट! बोला, "तुमसे भूल हुई है। मेरे पास नहीं, किसी और व्यक्ति के पास भेजे होंगे, मैं तो दयानन्द को प्रतिदिन गालियाँ देता हूँ।" भक्त ने कहा, "नहीं, किसी और के लिए नहीं, स्वामी जी ने यहीं भेजे हैं। गालियों की बात उन्हें ज्ञात है, फिर भी उन्होंने कहा कि इस कुटिया में दे आओ।" साधु ने जब यह बात सुनी तो शीघ्रता से उठा, दौड़ा हुआ स्वामी जी के पास गया। उनके चरणों में गिर पड़ा; बोला, "मुझे क्या पता था, तुम इतने बड़े देवता हो!"

सहनशक्ति से बड़े–बड़े कार्य होते हैं। भक्त दादू स्थान–स्थान पर ईश्वर–भक्ति का प्रचार करते हुए एक नगर के निकट गये। वन में रहने लगे। वहीं कितने ही लोग आते, दादू के प्रेम–भरे गीत सुनने। अपने हृदय में अमृत लेकर चले जाते। नगर के थानेदार ने यह बात सुनी तो उसने विचार किया, 'मैं भी दादू के पास चलूँ। मैं भी दर्शन करके अपने जीवन को सफल बनाऊँ।' चढ़ा वह घोड़े पर। नगर से बाहर वन में पहुँच गया। पर्याप्त आगे जाकर उसने देखा कि एक निर्धन–सा व्यक्ति केवल एक धोती पहने, वन में एक स्थान को स्वच्छ कर रहा है। घोड़े पर चढ़े ही चढ़े उसने गरजकर पूछा, "अरे ओ कंगले! तुझे ज्ञात है कि दादू भक्त इस वन में कहाँ रहते हैं?" वह व्यक्ति मौन रहा, कोई भी उत्तर उसने नहीं दिया।

थानेदार ने घोड़े से उतरकर तड़ातड़ कई थप्पड़ उसके मुख पर मारे। गालियाँ देता हुआ बोला, "बात का उत्तर भी नहीं दे सकता? धूर्त कहीं का।" वह व्यक्ति फिर भी मौन रहा। थानेदार उसके सिर में ज़ोर से एक ठोकर मारकर पुनः घोड़े पर चढ़ा। आगे चला गया। थोड़ी ही दूर पर एक और व्यक्ति उसे मार्ग में आता हुआ मिला। थानेदार ने पूछा, "तुम्हें ज्ञात है कि दादू भक्त कहाँ रहते हैं?" उस व्यक्ति ने कहा, "वे तो उधर रहते हैं जिधर से आप आ रहे हैं। मैं भी वहीं जा रहा हूँ, मेरे साथ आइये।" थानेदार ने वापस आकर देखा कि जिस व्यक्ति को वह थप्पड़ और गालियाँ दे के गया था, वही दादू भक्त है। पूछो मत कि उसकी क्या दशा हुई! दादू के चरणों को छूकर घबराया हुआ बोला, "मैं तो आपको गुरु धारण करने आया था, आपको ही पीट बैठा। मुझे क्षमा कर दीजिये।" दादू हँसकर बोले, "घबराते और दुःखी क्यों होते हो भाई! एक व्यक्ति घड़ा खरीदता है तो उसे भी ठोक–पीटकर खरीदता है। तुम तो गुरु धारण करने आये हो, तुम्हारे लिए उचित यही था कि उसे ठोक–पीटकर देख लो कि यह कच्चा तो नहीं है।" यह है तप का महत्त्व! परन्तु ऐसी कितनी बातें आपको सुनाऊँगा। समय थोड़ा रह गया है और अभी मुझे कहना है बहुत–कुछ। इसलिए मुण्डक ऋषि के बताये हुए तीसरे साधन की बात सुनिये जिससे आत्मदर्शन होता है।

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 06 का शेष

वृष्टि कारक यज्ञ...

यज्ञ का प्रभाव पौधों की जड़ों तक होता है और उससे जमीन में अधिक नमी बनी रहती है। पौधों पर लगने वाले कीटों के नाश के लिये विश्वविद्यालय द्वारा यज्ञ की राख और गोबर की खाद के प्रयोग की संस्तुति भी की गई है। पानी में राख मिलाकर उससे सिंचाई करने से पौधों के कीटों को नष्ट करने की शक्ति भी मिलती है। मन्त्रोच्चार के साथ की गई सिंचाई इस शक्ति को और बढ़ा देती है।

'अग्निहोत्री विश्वविद्यालय' के वैज्ञानिकों ने दक्षिण अमेरिका की फसलों को हानि पहुंचाने वाले **'आलूवीनी'** नामक कीटाणु को समूल नष्ट करने में सफलता प्राप्त की है। इन वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि यज्ञ का धुंआँ आठ किलोमीटर तक चक्कर लगाता है और वहाँ की वायु का प्रदूषण समाप्त होकर उस क्षेत्र की फसलों का स्वस्थ विकास होता है।

आयरलैंड के खेत में घोंघों के व्यापक प्रकोप को यज्ञ द्वारा नियंत्रित किया गया। बीमार मुर्गियों के आहार में यज्ञ की राख मिलाने से वे स्वस्थ हो गईं।

यज्ञ की हवि में प्रमुख स्थान घृत=घी का है। इसे **"आज्य"** भी कहते हैं, आज्य का अर्थ है–

"आ समन्तात् लोकान् जायते अनेन्य:"– घी के द्वारा लोक लोकान्तर के प्रदूषण रूपी असुर तत्व को नष्ट करने के तत्व हैं। गाय के दूध से बने घी में जलने के बाद भयंकर विष की प्रतिरोधक शक्ति बनती है, जिससे वातावरण के जल और वायु में मिले हुए विषैले पदार्थों का पृथक्करण होता है। यज्ञ डी.डी.टी., फिनाइल या रोग निवारक टीके आदि दवाइयों से अधिक जल्दी और कारगर उपाय करता है। यज्ञ की हवि में शक्कर के उपयोग से जो धुंआं श्वास द्वारा शरीर में जाता है वह कैंसर को दूर करता है। धुंएं के साथ श्वास शरीर में सीधे प्राणवायु में मिलकर रक्त में मिलती है अतः इंजेक्शन से भी जल्दी असर करती है। अन्य दवाओं में सीमित स्थान और सीमित व्यक्तियों को ही बचाने की क्षमता है, पर यज्ञ की वायु तो सर्वत्र पहुंचती है। यह यज्ञ करने वालों को ही नहीं सभी प्राणियों, पशु–पक्षियों एवं वृक्ष–वनस्पतियों के आरोग्य की भी रक्षा करती है। घी और सामग्री के जलने पर उसका धुंआं ऊपर उठता है और उसकी गति सर्पाकार होती है अतः अधिक से अधिक वायु में घर्षण होकर शुद्धिकरण की क्रिया दुगुनी हो जाती है। यज्ञ धूम्र, प्रकृति द्वारा प्राप्त पृथ्वी जल और वायु का जो आवरण है जिसे **'पर्यावरण'** कहते हैं, उसके प्रदूषण को दूर करता है। अग्नि में गोघृत की डाली हुई आहुति वायुमंडल में मार्जन, शोधन, भेदन क्रिया उत्पन्न कर देती है और सूक्ष्मातिसूक्ष्म होकर formaldehyde gas में बदल जाते हैं तथा कई गुना शक्तिशाली होकर वायुमंडल को प्रदूषण रोधक बना देते हैं। यज्ञाग्नि के इस विशिष्ट शोधक गुण के आश्चर्य चकित करने वाले अनेक उदाहरण हैं–

1) **'भोपाल में यूनियन कार्बाइड'** कारखाने से 2/3 दिसंबर 1984 की मध्य रात्रि में **'एम.आय.सी.'** गैस का रिसाव हुआ उस समय सभी सो रहे थे। गैस के धुंएं से पीड़ित 36 वर्षीया अपनी पत्नी त्रिवेणी को वमन करते सुन 45 वर्षीय श्री एस.एल. कुशवाहा जाग गए, वे स्वयं और उनके बच्चे भी खांसने लगे। सबके सीने में दर्द, आंखों में जलन और दम घुटने लगा। लोगों की भीड़ को भागते देख वे भी भागने की सोच ही रहे थे कि तभी उनकी पत्नी ने हवन करने के लिए कहा। सभी यज्ञ करने लगे और 20 मिनट में ही चमत्कारिक रूप से M.I.C. GAS का दुष्प्रभाव समाप्त हो गया।

2) 33 वर्षीय श्री एम.एल. राठौड़ अपनी पत्नी, चार बच्चों, माँ तथा भाई के साथ भोपाल रेलवे स्टेशन के समीप ही रहते थे। उस स्थान पर इस विषैली गैस के कारण सैकड़ों व्यक्ति मर गए। राठौर विगत पांच वर्षों से यज्ञ करते हैं, उन सबने यज्ञ करना शुरू कर दिया। परिणामतः उन पर गैस का कोई प्रभाव नहीं हुआ।

3) चिली के **'एंडेस'** पर्वत पर एक विशिष्ट यज्ञ–शाला का निर्माण हुआ है, वहाँ अनेक लोगों ने अनेक रोगों से मुक्ति पाई है। यहाँ तक कि घायल और बीमार जंगली पशु–पक्षी भी वहाँ चले आते हैं और जब तक रोग मुक्त नहीं होते, वहीं रहते हैं, यज्ञ करने वाले परिवारों व उनके फलों के बागों को क्षति नहीं पहुँचाते। अभी हाल ही में क्षेत्र में एक बर्फीला तूफान आया था। अग्नि–होत्र करने वालों के परिवार सुरक्षित रहे।

4) महाराष्ट्र में अम्बाजोगाई ग्राम में अग्निहोत्र के प्रयोग से कुछ बालक जो मिर्गी के रोग से पीड़ित थे वे ठीक हो गए हैं।

5) मुम्बई में एक सिक्ख डॉक्टर हैं जो यज्ञ के द्वारा पागलपन का इलाज करते हैं।

यज्ञाग्नि किस प्रकार पर्यावरण की शुद्धि के साथ आरोग्य देने वाली है अथर्व वेद के इस मन्त्र में कहा गया है–

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत्।।

–अथर्व वेद 1.8.1

अर्थात् यज्ञ में डाली हुई आहुति विनाशकारी रोगों और दोषों को ऐसे ही बहाकर ले जाती है, जैसे नदी झाग रूप कूड़े–कचरे को बहा ले जाती है।

7, MIDC नेताजी सुभाष चन्द्र मार्ग,
सातपुर, नाशिक–422007

www.thearyasamaj.org

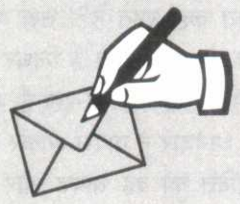

पत्र/कविता

योग भगाये रोग

उदर–रोग दे यों उड़ा ज्यों नग को बारूद।
उत्तम धोबी पेट का सर्दी का अमरूद।।

चीकू कूची मारता योग भगाये रोग।
ब्रह्मचर्य की साधना जीते हर अभियोग।।

उठना ब्रह्ममुहूर्त्त में करना ऊषः पान।
अधि–व्याधि अभिशाप को हरे ब्रह्म वरदान।।

आँख बन्द कर देख लो भीतर का हर रंग।
मन की आँखे जब खुलें हो जाओगे दंग।।

भीतर अपना राज है बाहर जंगल राज।
सुन भीतर की बाँसुरी पहन ध्यान का ताज।।

अन्दर मन्दर सत्य का बाहर पग–पग झूठ।
भीतर घुसते सूरमा बाहर टूटी मूठ।।

कच्चे फल पकने लगे कृत्रिम विधि से रोज।
बच्चे पापा बन रहे बनें मृत्यु का भोज।।

सारा अमृत ओज कर बचे कहाँ से ओज।
ब्रह्मचर्य बकवास है युग की सड़ियल खोज।।

छुप–छुप करते डॉक्टर सब पातंजल योग।
प्रकट विरोधी दीखते यह कैसा दुर्योग।।

हँसी एक वरदान है रोना है अभिशाप।
खुलकर हँसना पुण्य है घुटकर रोना पाप।।

फिसल जवानी जा रही कसकर पकड़ सँभाल।
पहले क्रम पर स्वास्थ्य है पीछे आटा–दाल।।

मस्तक पर दस्तक हुई खुला सहस दल–द्वार।
ब्रह्मरन्ध्र रिसने लगा है आनन्द अपार।।

बना सके है योग ही भोगी को नीरोग।
कम खाओ ज्यादा जिओ चखो सुखद संयोग।।

पूरे श्रद्धा भाव से कर अनुलोम–विलोम।
ठुकरा दो बीमारियाँ पिओ स्वास्थ्य का सोम।।

डॉ सारस्वत मोहन मनीषी

उससे ऐसा संविधान बनवाया गया

प्रति वर्ष डॉ. भीम राव अम्बेड़कर का जन्म दिवस सर्वत्र जोर शोर से मनाया जाता है जबकि उन्होंने संविधान बनाकर सौंपते समय स्वयं कहा था कि यह संविधान अति श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि यह उनकी सोच के अनुकूल नहीं है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि उनसे ऐसा संविधान बनवाया गया है। वे तो सावरकरवादी सोच के थे।

उन्होंने जाति के आधार पर आरक्षण अनुसूचित जाति/जन जाति को इसलिए दिया था क्योंकि वह केवल 10 वर्षों के लिए था। उसे बार–बार क्यों बढ़ाया जाता है? और कब तक ऐसा ही होता रहेगा? मेरी मांग है अनुसूचित जाति/जन जाति को आरक्षण आर्थिक आधार पर देने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जाए ताकि प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो।

इसी प्रकार अनुच्छेद 370 व 371 अस्थायी हैं जो कुछ वर्षों के लिए हैं। इसे सदैव बनाए रखना संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है। मेरी मांग है कि 25–1–2050 से पूर्व यह अस्थायी अनुच्छेद समाप्त करने के लिए सभी दलों को सहमत कर लिया जाए। एक अस्थायी व्यवस्था यदि 100 वर्षों तक जारी रखी जाती है तो यह पर्याप्त समय है।

काली चरण आर्य
पूर्व प्रधान आर्य समाज
चौक बाजार बुलन्दशहर

****

कृप्या संशोधन करे

आपकी सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य जगत् के 45 अंक से पृष्ठ अन्तिम के अर्न्तगत पं. गगा प्रसाद उपाध्याय की जंयती पर निवेदन है कि पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, इलाहाबाद के थे स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती (पूर्व प्रोफेसर सत्य प्रकाश) जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्राध्यापक थे, के पिता थे पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी।

टेहरी गढ़वाल में सुरक्षा न्यायधीश गंगा प्रसाद मूलतः मेरठ के थे तथा (श्री पं. गंगाप्रसाद) की प्रसिद्ध पुस्तक Fountain Head of Religion हैं कृपया संशोधन को दे सकते हैं।

गौर मोहन
3/5 शकंर कालोनी
श्री गंगा नगर

****

आग से जलने पर उपचार

(1) आग से असावधानी से शरीर जल जाता है तो उस स्थान पर शहद का लेप कर दे जलन शान्त हो जायेगी।

(2) आग से जलने पर दाग (धब्बा) हो जाये तो उस स्थान पर "त्रिफला" का लेप कर दो लाभ होगा।

(3) जले स्थान पर धब्बे पर जामुन पेड़ की हरी पत्तियाँ पीस कर लगाने से भी लाभ होता है।

(4) जले हुए स्थान पर तुलसा जी के पतों का लेप करने से धब्बे गायब हो जाते है।

(5) जले हुए स्थान पर नारियल का तेल लगाने से भी लाभ होता हैं।

(6) जले स्थान पर (घृतकुमारी) ग्वार पाठे के गूदे को लगाना लाभ प्रद होता है। छाले नहीं पड़ते।

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कोट
अमरोहा 244221

****

पुण्य कर्म स्वतन्त्रता और पाप कार्य परतन्त्रता की ओर ले जाते हैं

मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मो के फलों के वशीभूत होकर ही कोई कार्य करता है। यदि हम किसी महान सुख अथवा विनाश कारी दुःख में अपने को अनुभव करते हैं तो वह हमारे पुण्य–पाप कर्मों का ही परिणाम है। आकस्मिक आने वाले दारुण दुःख भी हमारे द्वारा कृत कर्मो का फल हैं। हम अपने पूर्व कृत कर्मो के प्रभाव से ही उस महाविनाश के स्थल पर आए हैं। जीवन में आने वाला कोई भी बड़े से बड़ा आकस्मिक दुःख हमारे कर्मो का ही फल है।

कुछ विद्वानों का मत है कि हमें बिना कर्म किए ही दारुण दुःख मिल सकता है। यह मत युक्ति तथा प्रमाण के विरुद्ध है। मनुष्य पुण्य कर्मो का फल भोगने में स्वतन्त्र तथा पाप कर्मो का फल भोगने में परतन्त्र होता है। पुण्य कर्म हमें स्वतन्त्रता की ओर ले जाते हैं तथा पाप कर्म परतन्त्रता की ओर ले जाते है। परतन्त्रता के कारण ही व्यक्ति दुःखों को भोगता है। स्वतन्त्रता की अवस्था में तो सुख का ही वरण करता है।

हमारे द्वारा किए किसी कर्म का फल अनेक बार मिल सकता है तथा अनेक प्रकार से मिल सकता है। अनेक कर्म जुड़कर भी एक फल भी दे सकते हैं। कर्मो के फलीभूत होने की गति अत्यन्त गहन है। आत्मा अनेक जन्मों से अनेक प्रकार के कर्म करता आ रहा है। किन कर्मों के फलीभूत होने का समय आ गया है, यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए। जीवात्मा कर्म करने में स्वतंत्र है। इसलिए उसके द्वारा भविष्य में किए जाने वाले सभी कर्मो की भविष्यवाणी कोई नहीं कर सकता। जीवात्मा फल भोगने में परतंत्र है। उसके द्वारा किए कर्म का किस परिस्थिति में क्या परिणाम हो सकता है इसका अनुमान किया जा सकता है। किसी के भविष्य को पूर्णरूप से कोई नहीं जान सकता। यहाँ तक कि परमात्मा भी नहीं। जड़ ऋत् से बन्धा होता है चेतन नहीं। चेतन आत्मा स्वतन्त्र है, ऋत् से स्वतन्त्र है। वह अन् ऋत भी चल सकता है। आत्मा अपने पाप कर्मो द्वारा उत्पन्न परतन्त्रता के जाल में फँसा हुआ ही स्वतन्त्र कार्य करता है।

कृपाल सिंह वर्मा
253 शिवलोक, कंकर खेड़ा, मेरठ
9927887788

****

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज (अनारकली) ने किया भजन संध्या का आयोजन

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली ने अपनी गतिविधियों को विस्तार देने के लिए आर्य समाज ने एक नया ढंग खोजा है। आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, दयानन्द मॉडल स्कूल, मन्दिर मार्ग, एवं आर.डब्ल्यू.ए. सैक्टर–3 डी.आई.जेड़.एरिया गोल मार्किट के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 नवम्बर–2016 को सैक्टर–3 के मन को मोहित करने वाले पार्क में दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक वैदिक भजन संध्या एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि श्री एस.के. शर्मा (मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) थे जिसके प्रमुख वक्ता डॉ छवि कृष्ण शास्त्री (सेवा निवृत प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय संगठन) तथा भजन गायक श्री कमल जायसवाल थे।

मुख्य अतिथि श्री एस.के. शर्मा ने सामाजिक समरसता बनाये रखने पर बल दिया और कहा कि आर्य समाज पूरे समाज की शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति चाहता है। मुख्य वक्ता डॉ. छविकृष्ण शास्त्री ने अपने प्रवचन में कहा कि हम सब इस पार्क में पीपल वृक्ष के नीचे बैठे हैं, जहाँ पर ऋषि–मुनियों ने ज्ञान प्राप्त किया। आने वाला हमारा कैसा होगा हम विचार करते हैं। जैसे पीपल के छोटे से बीज में इतना विशाल पेड़ छिपा है वैसे ही हमारे दिल और दिमाग भी हैं। हम विशाल रूप में सोचें और हम सब ईश्वर पर दृढ़ विश्वास करें प्रभु हमारी हर चिन्ता को निश्चित रूप से दूर कर देंगें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री एस.के. शर्मा (मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) श्री अजय सूरी (कार्यकारी प्रधान आर्य समाज (अनारकली), ब्रि.ए.के. अदलखाँ (मन्त्री आर्य समाज) (अनारकली), श्रीमती स्नेह मोहन (सहमंत्री आर्य समाज अनारकली), डॉ. मनमोहन (प्रो. फिजिक्स, दिल्ली विश्व विद्यालय), श्रीमती वन्दना मेहरा (इंचार्ज दयानन्द मॉडल स्कूल सै.3) इन सभी का शाल एवं सै.3 के प्रधान श्री शिवराम यादव, मंत्री श्री हेमराज शर्मा, श्री सोमप्रकाश, श्री रवि, श्रीमती मंजू राठी, श्रीमती सुनीता सोलंकी, श्री राजपाल, श्री विजय, श्री पवन कुमार, श्री रमेश चन्द्र राठी, श्री दुर्गाप्रसाद, श्री ओमप्रकाश तथा अन्य पदाधिका उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में आर्य समाज (अनारकली) एवं दयानन्द मॉडल स्कूल, मन्दिर मार्ग की अध्यापिकाओं एवं कर्मचारियों का सराहनीय योगदान रहा।

आर्य समाज हुडा पानीपत में ऋषि निर्वाण दिवस पर यज्ञ तथा प्रवचन

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण दिवस, आर्य समाज हुड्डा में समारोहपूर्वक मनाया गया। मुख्य प्रवक्ता डॉ. हरि प्रसाद शास्त्री जी ने कहा कि यदि हम अपने जीवन का उत्थान चहाते हैं तो हमें वेदों की ओर मुड़ना चाहिए। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है। हमें अन्धविश्वासों से दूर हटकर ईश्वर की ही पूजा करनी चाहिए। ईश्वर संसार का रचयिता है। मूर्तिपूजा करना एक अभिशाप है। हम अपनी ही तराशी हुई मूर्तिओं की पूजा करते हैं। भ्रूण हत्या एक महापाप है। सरकार को इस पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। आजकल गुरुकुल खोलने की नित्तान्त आवश्यकता है। कुरीतियों का स्वामी दयानन्द जी ने निषेध किया तथा विधवा विवाह करने का समर्थन किया। स्वामी जी ने जात–पात से ऊपर उठकर गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर व्यक्ति की योग्यता को परखने का समर्थन भी किया।

उन्होंने कहा कि सबसे पहले आर्य समाज ने ही महिला शिक्षा हेतु बीड़ा उठाया। इसी कारण आज हमारी बहन–बेटियाँ उच्च पदों पर आसीन हैं। यज्ञ ही श्रेष्ठ कर्म है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन अपने परिवारजनों के साथ यज्ञ करना चाहिए। उन्होंने देश में हो रही आजकल की घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त की और कहा कि देश के विरुद्ध नारे लगाने वालों वाले को अवश्य सजा मिलनी चाहिए। उड़ी जैसे हमलों की गहरी निन्दा की तथा पाकिस्तान को करारा जबाव देने की सरकार से अपील की। उन्होंने डी.ए.वी. जैसी शिक्षण संस्थाओं की शिक्षण क्षेत्र में योगदान देने के लिए भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने गुरुकुलों को दिल खोलकर दान देने की अपील भी की। हमें विद्वानों, उपदेशकों तथा अतिथिजनों का दिल से सम्मान करना चाहिए।

यज्ञ आचार्य संजीव वेदालंकार तथा आचार्य संजय शास्त्री जी ने विधिपूर्वक तथा मंत्रोचारण के साथ सम्पूर्ण कराया।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर मांगलिक यज्ञ

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया एवं श्रीमती सुषमा कथूरिया ने अपने निवास स्थान पर सपरिवार सफल वैवाहिक जीवन की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर मांगलिक यज्ञ किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं उनके सहायक आचार्य योगेन्द्र शास्त्री थे। डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् एवं देश के जाने माने साहित्यकार हैं। भावनगर विश्वविद्यालय, (भावनगर, गुजरात) में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर–अध्यक्ष रहे डॉ. कथूरिया ने 45 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया है तथा उनके 46 स्तरीय ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. कथूरिया का जीवन यज्ञमय है और उनके परिवार में प्रतिदिन यज्ञ की अग्नि प्रज्ज्वलित होती है।

इस अवसर पर उन्हें आशीर्वाद देते हुए प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने कहा डॉ. कथूरिया बहुभाषाविद, सह्रदय कवि, यशस्वी लेखक एवं मूधन्य साहित्यकार हैं। आचार्य श्री ने वैवाहिक दम्पति के स्वस्थ अदीन एवं निरोग रहते हुए शतायु होने की कामना की तथा उनके पूरे परिवार के आस्था एवं श्रद्धाभाव की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य के जन्मोत्सव पर आयुष्काम महायज्ञ

महान समाज सेवी एवं शिक्षा समिति के चेयरमेन श्री यशपाल आर्य जी के जन्मोत्सव पर विराट् आयुष्काम यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा ने विशाल जनसमूह का संबोधित करते हुए कहा कि सुख शांति चाहने वाला कोई व्यक्ति यज्ञ का परित्याग नहीं करता। जो यज्ञ को छोड़ता है उसे यज्ञरूप परमात्मा भी छोड़ देता है। सबकी उन्नति के लिए आहुतियाँ यज्ञ में छोड़ी जाती है। विज्ञान के अनुसार वस्तु ऊर्जा तभी बनती है जब वह फूंकी जाए।

इस महायज्ञ के मुख्य यजमान श्री यशपाल आर्य एवं श्रीमती मोहनी देवी थे। इस शुभावसर पर उन्हें आशीर्वाद देते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि श्री यशपाल आर्य जी धर्मनिष्ठ, परोपकारी, महान समाज सेवी, लोकप्रिय निगम पार्षद, राष्ट्रभक्त एवं एक नेक इंसान हैं। इस अवसर पर हिमाचल से पधारे श्रद्धेय आचार्य आर्य नरेश जी के सारगर्भित व्याख्यान हुए।

इस मांगलिक अवसर पर हजारों उपस्थित जन समुदाय ने श्री यशपाल आर्य जी को हार्दिक शुभकानाएँ दी।

www.thearyasamaj.org

Editor
Arya Sandesh
15- Hanuman Rd
ND-110001

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 23/24-11-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

डी.ए.वी. श्रेष्ठविहार में जापानी बच्चों का हुआ स्वागत

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-92 में जापानी विद्यार्थियों का भव्य स्वागत किया गया। ये विद्यार्थी निशीयमातो गाकुएन हाई स्कूल, जापान से हैं। सांस्कृतिक एवं शैक्षिक आदान-प्रदान के अंतर्गत 135 बच्चों का यह बड़ा समूह अध्यापकों सहित भारत भ्रमण पर है।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल श्रेष्ठ विहार ने भारतीय परम्परा के अनुसार 'अतिथि देवो भव' की उक्ति को चरितार्थ किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेम लता गर्ग, मैनेजर श्री एस.के. जैन एवं विद्यार्थी परिषद के सदस्यों ने बड़ी गर्मजोशी से अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर डी.ए.वी. सेंटर ऑफ अकेडमिक एक्सीलेंस की ओ.एस.डी. श्रीमती राजिन्द्र नरूला जी भी मौजूद थीं।

इस अवसर पर स्कूल में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। एक-दूसरे की सांस्कृतिक विरासत को जानने के लिए दोनों देशों के बच्चों ने अपने-अपने सांस्कृतिक नृत्य और संगीत प्रस्तुत किए।

दोनो विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपने-अपने विद्यालय के एक दिवस की दिनचर्या पर सुंदर एक रोचक प्रजेंटेशन प्रस्तुत की। खेल, संगीत, नृत्य, चित्रकला, क्राफ्ट आदि गतिविधियों में दोनों ने अपनी प्रस्तुति को साझा किया।

विद्यार्थियों के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धन के लिए स्कूल ग्राउंड में अनेक स्टॉल भी लगाए गए। इनमें प्रमुख थे-कुम्हार के दवारा वहीं पर अनेक वस्तुओं का निर्माण। जापानी बच्चों ने अपने हाथों से इन्हें बनाने का प्रयत्न किया। उन्हें उस मिट्टी को छू कर बहुत अच्छा लग रहा था। अनेक बच्चों ने मेहंदी लगवाई, रंगोली बनाई, राजस्थानी कठपुतलियों का नृत्य देखकर तो वे रोमांचित हो गए। स्टॉल का मुख्य आकर्षण था-'मजमा'-यह जादू की एक ऐसी कला है जो भारत में लगभग विलुप्त होने की कगार पर है। इसके बहुत कम कलाकार बचे हुए हैं। इसमें भारत के परम्परागत तरीके का जादू दिखाया गया। बच्चे यह सब देखकर मंत्र-मुग्ध हो गए। उन्होंने तालियाँ बजाकर कलाकारों का उत्साह बढ़ाया।

स्कूल के विद्यार्थियों ने जापानी विद्यार्थियों के साथ अपने अनुभव साझा किए। सभी बच्चे बड़े प्रसन्न एवं उत्साहित नज़र आ रहे थे। दोनों विद्यालयों ने शांति सौहार्द, प्रेम, खुशहाली की कामना को प्रकट करते हुए एक-दूसरे को यादगार स्वरूप स्मृति चिह्न भेंट किए।

आर्य समाज, अलवर ने मनाया 113 वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर का 113 वाँ वार्षिकोत्सव एवं 26वाँ कार्तिक मासीय यज्ञ कै. रघुनाथ सिंह जी ने संरक्षण एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व महामंत्री श्री अमर मुनि जी की अध्यक्षता में समारोह अत्यन्त हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता-प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं विशिष्ट अतिथि श्री सत्यपाल आर्य रहे।

कार्तिक मासीय यज्ञ की पूर्णाहुति पं. चन्द्रशेखर शास्त्री एवं पं. [illegible] कुमार कौशिक के सानिध्य में वेद म[illegible] पात: 7.30 बजे से 9.00 बजे तक पूर्ण हुई।

दिल्ली से पधारे देश वैदिक विद्वान् पं. चन्द्रशेखर शास्त्री के प्रवचन में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के मंत्रों की व्याख्या करते हुए ज्ञान, कर्म, उपासना, के महत्व पर प्रकाश डाला और मनुष्य को सुख शान्ति व आनन्द प्राप्त करने के बहुत ही सरल रोचक भाषा में तरीके बताए और परोपकार को ही सब वेदों का सार सबसे बड़ा धर्म और ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया।

अमर मुनि जी ने सत्य को ही ईश्वर बताते हुए सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। डॉ. राजेन्द्र कुमार आर्य एंव श्रीमती ईश्वर देवी शर्मा व विद्यालयी छात्राओं ने मधुर भजन प्रस्तुत किये।

श्री जगदीश प्रसाद आर्य जखराना ने कार्यों द्वारा आर्य समाज का प्रचार करने को कहा और विचारों को व्यवहार में लाने पर बल दिया।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग के प्रधान श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी का धन्यवाद करते हुए आभार व्यक्त किया।

आर. के. पुरम में नाटकीय रूपान्तरण द्वारा बच्चों का विकास

बच्चों के विकास एवम् बचपन में सीखी गई आदतें कैसे व्यवहार व चरित्र में बदलती हैं, उस बात को ध्यान में रखते हुए डी.ए.वी. आर के पुरम सैक्टर-6 में एक सेमिनार हुआ जिसमें बताया गया कि बच्चे प्रकृति से ही खेलने में अधिक रुचि रखते हैं वे अपने आप को नाटक में दिए गए चरित्र में उतारकर उसे करने में अधिक आनन्द का अनुभव करते है। नाटक बच्चों को दुनिया व आसपास के वातावरण से भी जोड़ता है। डी.ए.वी. के अलग-अलग विद्यालयो से आई अध्यापिकाओं ने भी सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आर.के. पुरम सेक्टर-6 की प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता चोपड़ा जी ने भी बच्चों को बचपन में दी गई शिक्षा के महत्व को बताते हुए कहा कि जो संस्कार हम अपने बच्चो का बचपन में दे देते हैं। वही हमारे साथ जीवन भर रहते है। हम चाहे कितने ही बड़े हो जाए अगर वाणी में मिठास नहीं तो हम किसी भी कार्य को करने में सक्षम नही होते।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक - **पूनम सूरी**